रह्यो न चेत भई मति भङ्गा ।
धरो धर्म सुत यूथ मतङ्गा ॥
देश देश के मत्त समाजा ।
धरेउ दांउ प्रति धर्मज राजा ॥

दोहा ॥

पांसा शकुनी पाणि गहि देत भूमि जबडारि ।
करत कुलाहल लोग सब निज २ दांव पुकारि ॥

चौपाई ॥

हारे धर्म राज गज सर्व्वा ।
शकुनी अक्ष मेल सह गर्व्वा ॥
रहत सदा जो भूपति सङ्गा ।
शेष रहे ते सकल मतङ्गा ॥
पृथक पृथक कहि यूथप नामा ।
धरे नरेश जिन्हें विधि वामा ॥
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे ।
भई सिहारि धर्मसुत केरे ॥
चकित लोग सब देखि तमासा ।
कस नहिं परा धर्म सुत पांसा ॥

पुनि पुनि परत दांउ कुरुपति को ।
को जानत परमेश्वर गतिको ॥
शङ्कर सरुष धर्म सुत पाहीं ।
बाहु लीक आदिक पछिताहीं ॥
शकुनी पाण्डव सुतहि प्रचारा ।
लीन जीति भाजन भण्डारा ॥
कञ्चन आदि तड़ित मणि भाजन ।
हारे सकल धर्म महराजन ॥

सोरठा ॥

बसन कोश गे हारि रङ्ग २ के अति सुभग ।
दीन्हें पांसा डारि शकुनी शोचे कपट के ॥

दोहा ॥

देश देश के पाण्डवन देत दण्ड अवनीश ।
सकल पात्र धरि दांउपर दीन्हें धर्म महीश ॥

चौपाई ॥

शकुनी पांसा तमकि चलाये ।
कुरुपति जयति निशान बजाये ॥

बोलि लिये तब बान्धव चारी ।
दुरद दमत्त दुमुख उच्चारी ॥
कहेउ कि हम जीते नृप भारी ।
देखहु सघन वस्तु सब न्यारी ॥
एक विहीन धर्म महि पालहि ।
जो न डरत सपने रण कालहि ॥
ते हम सहज जीति अब पाये ।
बिन प्रयास विधि ताप बुझाये ॥
पठवहु बोलि बेगि नर नाहू ।
आवैं नतरु सेन सजि जाहू ॥
देहिं दण्ड नत आवहिं बांधी ।
देश देश प्रति करहु उपाधी ॥
दण्ड चतुर्गुण दश गुण लेहू ।
मिलै न तेहि यम शासन देहू ॥
दुर्योधन कर आयसु पाये ।
निज निज कारज सकल सिधाये ॥
अश्वा रूढ़ अनेक बुलाये ।
देश देश लिखि पत्र पठाये ॥

दोहा ॥

मिलहु आय आतुर नृपति त्यागि सकल सन्देह ।
देहु दण्ड दुर्योधनहिं नत जैहो यम गेह ॥

चौपाई ॥

जहं कहुं वीर धीर नृप जाना ।
साजि बिकट दल कीन पयाना ॥
जिनते बैर भाव अधिकाई ।
तहं उपाधि करि करहिं लराई ॥
सपनेहुं पाण्डु सुतन बल पाई ।
कीन्ह अवज्ञा जिह भुवराई ॥
करहिं उपाधि तासु संघ नाना ।
जिहि विधि होइ तासु अपमाना ॥
दण्ड चतुर्गुण दश गुण लेहीं ।
लखि बल हीन त्यागि तब देहीं ॥
काहुहि लेहिं बांधि कर सङ्गा ।
काहुहि करहिं समर मह भङ्गा ॥
इहां कुरुपति अति सुख पावा ।
दुर्दर्शनहि बहोरि बुलावा ॥

सजहु तात तुम दल समुदाई ।
लेहु धीर भट यूथ बुलाई ॥
महिखामती नगर को जाई ।
धरि आनहु निशिचर द्वौ भाई ॥

दोहा ॥

दण्ड बांधि कीजे उचित कीजे अबहि पयान ।
सजि दल दुर्दर्शन चले बाजन लगे निशान ॥

चौपाई ॥

देखि युधिष्ठिर अति दुख पावा ।
दुर्योधन कहं वचन सुनावा ॥
नीति नरेशन ते असि होई ।
जो जस दण्ड उचित तस सोई ॥
हम अदण्ड कृत सुत शिशुपाला ।
तुम दल पठयो अति बिकराला ॥
जो होइहि महि दीनि हमारी ।
तुम ते नहिं पाइ है भिखारी ॥
मष महं गयो तासु पितु मारा ।
किये दण्ड विन युगुल कुमारा ॥

तुमहि उचित अब संवत वन्ता ।
लेहु दगड जनि वर्ष प्रयन्ता ॥
तासु कानि मैं करत घनेरी ।
तुमहिं कहहुं यक सम्मत केरी ॥
यह प्रति पालहु बात हमारो ।
मन भावहि तस करहु अगारी ॥
तुमहिं नरेश उचित असि बाता ।
बार बार कह शत्रु अजाता ॥

सोरठा ॥

धर्मराज के वैन सुनि बोले कुरु राज तब ।
हमैं उचित यह हैन पाग्डव कर विन चेद्यसुत ॥

चौपाई ॥

अवनी पति अदगड करि देहीं ।
हम तजि राज्य कमगडल लेहीं ॥
तव मुख बनत कहत यह बाता ।
अपर न काहू सुनत सुहाता ॥
धर्मराज सुनि कुरुपति वानी ।
गे जरिगात तेज बल हानी ॥

भीम सेनि फरके भुज दण्डा ।
अधर फरहरे रोष उदण्डा ॥
पारथ भये विलोचन लाला ।
लखि अनर्थ कह धर्म नृपाला ॥
नाहिन समय रोष कर ताता ।
किमि समुझहिं मूरख यह बाता ॥
परम सुजान चतुर जे वीरा ।
समय विचारि धरहिं मन धीरा ॥
जाहि अभे मैं दीन्ह बसाई ।
अब तापर दारुण भै आई ॥
सकल हारि कर मोहिं न शोचा ।
जो यह परेउ परम सङ्कोचा ॥

सोरठा ॥

निजु नयनन लखिमोहिं होत दुशासन दुख निपटि ।
ताते यहि विधि तोहि समय जानि धीरज धरहु ॥
सप्र हमारि हजार आयसु विन जनि रिस करहु ।
त्यागहु सकल विकार तात भये अपमान के ॥

चौपाई ॥

बोले तब सहदेव सभागे ।
अब का देखत देखिहौ आगे ॥
अब ते भूप ख्याल तजि दीजे ।
अछत प्राण भवन मग लीजे ॥
नत दुर्योधन नृप अति नीचू ।
मारिहि सकल बोलाइ कुमीचू ॥
नहिं सहदेव वचन मन भाये ।
धर्मराज कर अक्ष उठाये ॥
भीम बहोरि कहा सुनु भ्राता ।
चारि याम रहि यामिनि पाता ॥
याम सयाद दिवस चलि जाई ।
अब अवसर नृप चलिय नहाई ॥
भीम वचन सुनि कह कुरु राजा ।
शकुनी ते भाजे बड़ि लाजा ॥
प्रथम हीन करि चहत न खेला ।
तासु सङ्ग बड़ि हानि पछेला ॥

सुनि कुन्ती सुत अति रिस पायो ।
राखि दांव बहु अक्ष चलायो ॥

सोरठा ॥

परो न धर्मज अक्ष शकुनी लीन उठाइ कर ।
कपट रूप महं दक्ष पुनि पांसा फेंक्यो चहै ॥

दोहा ॥

धर्मराज निज राज्य सब धरि दीन्हों यकदांय ।
जीति लीन्ह शकुनी सबै बिन श्रम कपट उपाय ॥

सोरठा ॥

धरन लगे नरदेव राज्य सकल चित भ्रम विवश ।
कहि दीन्हो सहदेव तीनि वरण ब्राह्मण विना ॥

चौपाई ॥

ब्राह्मण कहो जाहिं किहि हारे ।
सब प्रकार शिरमौलि हमारे ॥
लखि सहदेव केरि चतुराई ।
बिहंसि रहे कुरुनाथ चुपाई ॥
धरो दांव नहिं रहो संभारा ।
हारे भूप सकल परिवारा ॥

राज्य जीति कुरुनायक लीन्हों ।
गह गह जयति दुन्दुभी दीन्हों ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ ।
शकुनी जीते छल बल तेऊ ॥
देव कोश समेत धरि दीन्हा ।
नकुलहि जीति कुरुपति लीन्हा ॥
पटल वितान सकल जो रहेऊ ।
सो धरि बहुरि धर्म सुत कहेऊ ॥
पारथ धरे सहित सब सामा ।
हय गज वसन कोश अरु धामा ॥
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये ।
परमानन्द निशान बजाये ॥
बहुरि भूप युत सहित भंडारा ।
दीन दांव धरि पवनकुमारा ॥
हारि गये कुरुनायक जीते ।
गयो रङ्क पद भागि महीते ॥
दीने द्विजन याचकन दाना ।
हय गज रत्न भूमि गण नाना ॥

गज पुर रहे न रङ्क अभागी ।
केवल धर्म धुरन्धर त्यागी ॥

दोहा ॥

चित भ्रम चकित अजात अरि धरि शरीर नृप दीन ।
धर्म धुरन्धर धीर धर नहिं विचार कछु कीन ॥

चौपाई ॥

दीन्हें शकुनी अक्ष उलारी ।
किङ्कर भये धर्मसुत हारी ॥
छूट राज पद दास कहाये ।
भये अचेत रहे शिर नाये ॥
पुनि २ शकुनी कह नृप पाहीं ।
जो कछु शेष होइ गृह माहीं ॥
उठत खेल अब सो धरि दीजे ।
पीछे पद धरि अयश न लीजे ॥
धर्म सुतहि कुरुनाथ प्रचारा ।
गूढ़ गिरा कहि बारहिं बारा ॥
तुम नृप विदित सत्य व्रत धारी ।
धरिहि न पद यहि कर्म पछारी ॥

अटपटि कुरुनन्दन की बानी।
समुझि न परी तर्क छल सानी॥
उर बरि उठी रोष दुख ज्वाला।
धरि दीन्ही तनया पञ्चाला॥
बन्धव प्रिय जन अतित समाजा।
करहु मानि मम आयसु काजा॥
कह्यो युधिष्ठिर आयसु होई।
माथे मानि करब हम सोई॥
रूख बदन करि कह कुरुराई।
द्रुपद सुता अब देहु मंगाई॥
सदसि बीच मुनि निर्भय बानी।
रोष ज्वाल उर अति सर सानी॥
धरि धीरज रिस सो उर मारी।
मूर्छि परे नृप अवनि दुखारी॥
रहा न चेत कहा कछु नाहीं।
अटकि रहे मणि खम्भन माहीं॥

दोहा ॥

सबलसिंह धर्मज कथा लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि हृदय क्रोध सरसान ॥

चौपाई ॥

सूत जात कामी तेहि नामा ।
करत सदा कौरव पति कामा ॥
अति गम्भीर बचन नृप कहेऊ ।
धर्मज महाराज नहिं रहेऊ ॥
भये आजु ते दास हमारे ।
सह परिवार द्रौपदी हारे ॥
सो न युधिष्ठिर देत मंगाई ।
आनहु द्रुपद सुता तुम जाई ॥
लावहु सभा द्रुपद की जाता ।
तुम सब विधि प्रपञ्च के ज्ञाता ॥
कहेउ संदेश गये पति हारी ।
अब तुम सोवहु सेज हमारी ॥
सुनत बचन कामी उठि धावा ।
आतुर धर्म सिविर कहं आवा ॥

दुर्योधन कर सकल संदेशा ।
कहो शील तजि सकल मदेशा ॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा ।
नत धरि लै जैहों गहि हाथा ॥

सोरठा ॥

सुनत सूत मुख बात भय बशकांपी द्रौपदी ।
बिकल भये सब गात कौरव नाथ स्वभावलखि ॥

चौपाई ॥

धरि धीरज कह द्रुपद कुमारी ।
सुनहुं सूतपति बात हमारी ॥
कस अस बचन कहेउ कुरुराई ।
राज सभा तिय केहि बिधि जाई ॥
कहे सूत यह आयसु मोहीं ।
लै जैहों धरि सभा मं तोहीं ॥
सुनत निठुर सारथि की बानी ।
अति सरोष दुर्योधन रानी ॥
कहा सूत सन बचन रिसाई ।
जानि परी तुम्हरे शिर आई ॥

भूले कहो भूल क्यहि केरे।
गये बिसरि भुज पाण्डव केरे॥
समुझि परत यह होत बिशेषा।
चहत नैन तव यम पुर देखा॥
बोलेहु सूत सुनहुं महरानी।
मैं आयों नृप आयसु मानी॥
बचन तुम्हार शीस धरि जैहों।
दोष न मम कुरुपतिहि सुनैहों॥

दोहा॥

सुनत सारथी के बचन तुरत दीन दुरिआय।
रूख देखि रानी बदन गयो भागि भयपाय॥

चौपाई॥

कहि सन्देश सकल तेहि दीन्हा।
सुनि कुरुनाथ क्रोध अति कीन्हा॥
दुःशासनहिं बुलाइ नरेशा।
कहेउ सरोष सूत सन्देशा॥
पुनि पुनि कहत रोष दारुण अति।
केश पाश करि लाउ घसीटति॥

यह सठ पाण्डु सुवन डर पाई ।
सको न मूढ़ द्रौपदी लाई ॥
भीम बाहु लखि कम्पित गाता ।
अजहूं गहबर कहत न बाता ॥
सबते प्रिय निज जीवन जानी ।
सकत मूढ़ नहिं धीरज आनी ॥
चलो दुशासन आयसु मानी ।
आयो जहां द्रौपदी रानी ॥
आवत सरूष दुशासन देखी ।
पञ्चाली भय तृषित बिशेषी ॥
कहो दुशासन सरूष रिसाई ।
चलु बोलहि दुर्योधन राई ॥

दोहा ॥

दुशासेन के बचन सुनि द्रुपद सुता अकुलानि ।
हमरे तुम सहदेव सम सकत जोरि युग पानि ॥

चैापाई ॥

तात नीति मग देखु बिचारी ।
कहि बिधि जाइ सभा मों नारी ॥

जब लगि हम शिर सेन नहाहीं ।
परुष मुख देखन को नाहीं ॥
मैं रज श्रवत एक पटधारी ।
सभा गये पति जाइ तुम्हारी ॥
तात चलन कर अवसर नाहीं ।
नत जातिहुं मैं कुरुपति पाहीं ॥
भीष्मादिक बची सब राजा ।
जात सभा मह चियको लाजा ॥
तात एकान्त बोलि कुरुराई ।
मैं सब बिधि कहतिउं समुझाई ॥
मम दिशि ते समुझाइ नरेशा ।
कहेउ तात तुम भल सन्देशा ॥
दूशासन करि नयन तरेरे ।
सुनि री हारि गये पति तेरे ॥
कसन बिचार कीन्ह तब मूढ़ा ।
म्वहिं समुझावत बचन अगूढ़ा ॥

दोहा ॥

चलत न तैं चिय सदसि कह कत उत्तर प्रति बात ।
जोरि युगुल कर द्रौपदी कहत भई बिलखात ॥

चौपाई ॥

सुनहु तात तुम नीति निधाना ।
सो मग कौन जो तुमहिं न जाना ॥
तुम कह तात सप्र शत मोरी ।
कहहु सत्य राखहु जनि चोरी ॥
कहहु वेगि तजि जीवन पापू ।
नृप हारे म्वहिं प्रथम कि आपू ॥
हारे होइं प्रथम निज रूपा ।
किङ्कर भये मिटा पद भूपा ॥
दासन के गृह होत न रानी ।
नीति बिचारु समुझि मम बानी ॥
छूटि गये सब नात हमारे ।
नृप हारे हम जाहिं न हारे ॥
जो म्वहिं प्रथम धरो नर नाथा ।
लाज त्यागि चलिहौं तव साथा ॥

होइ किङ्करी करब गृह काजू ।
जो कहिहैं कुरु कुल महराजू ॥
वेगि समुझि प्रति उत्तर दीजे ।
आयसु होइ अवसि सो कीजे ॥

दोहा ॥

सुनत दुशासन ये वचन धाये। नैन तरेरि ।
हारि गयो अज्ञान पति नीति विचारत चेरि ॥

सोरठा ॥

कहत कटुक दुर्बाद रूख नयन धावत भयो ।
देखि जात मर्य्याद भय वस कम्पी द्रोपदी ॥

चैापाई ॥

जात पुकारत आरत वानी ।
देखि दुशासन अति रिस ठानी ॥
झपटि केश लीन्हें गहि हाथा ।
चले। घसीटत जहं कुरुनाथा ॥
देखि दशा दासिन के वृन्दा ।
करहिं विलाप विपति परि फन्दा ॥

दुर्योधन कर सब रनिवासू ।
बिलपत गिरत नैन मग आंसू ॥
परी धर्म सुत सिविर तराषा ।
गज पुर सकल शोक वश कांपा ॥
गहे दुशासन द्रुपदी बारा ।
निकसा नाग नगर गलियारा ॥
देखि दशा बिलपहिं पुर बासी ।
जड़ जङ्गम खग मृग नृप दासी ॥
जिहि मग निकसत अन्ध कुमारा ।
देखि वज्र उर जात दरारा ॥
देखत सब जहं तहं बिल खाहीं ।
होत शोर तिहि मारग माहीं ॥

दोहा ॥

देखि झरोखे महल ते दासिन वृन्द हवाल ।
जाइ जाइ रनिवासतिन विदित कीन तत्काल ॥

चौपाई ॥

यह गति सुनि कौरव गण रानी ।
बिलपहिं सकल हृदय हति पानी ॥

दुर्गति समुझि द्रौपदी केरी ।
करुणा भवन २ प्रति घेरी ॥
नांघत पौरि खरी पर जाई ।
द्रुपद सुता परवश बिलखाई ॥
निकस्यो गन्धारी के द्वारे ।
द्रुपद सुता तत विकल पुकारे ॥
मोहिं छुड़ाउ मातु गन्धारी ।
बार २ कह द्रुपद कुमारी ॥
दासिन भीतर खबरि जनाई ।
तजि पर्य्यङ्क जननि उठि धाई ॥
हा पुत्रो हा धर्मज प्यारी ।
तुव बलि जाइ मातु गन्धारी ॥
छूटे केश उघरि गयो चीरू ।
विलपत दासी गण सब भीरू ॥
आवत जानि मातु गन्धारी ।
गयो दुशासन बेगि अगारी ॥
जब लगि रानि द्वार पगु दयऊ ।
राज सभा दुःशासन गयऊ ॥

कोउ मुसकात द्रौपदी देखी।
तर्क्क करत कोउ मूढ़ विशेषी॥

सोरठा॥

करत दया कोउ धीर कोउ धिक्कृत दुशासनहिं।
नयन तजत कोउ नीर कोउ निन्दत भीमादिकन॥
द्रुपद सुता के केश गहि खेंचत कुरुपति अनुज।
बैठे सकल नरेश मध्य सभा तहं लैगयो॥

चौपाई॥

सिंहासन सोहत कुरुराई।
जाइ समीप दीन ठढ़ि आई॥
चहुंदिशि चितै चकित पञ्चाली।
राज सभा लखि थर हरहाली॥
लाज विवश नहिं रहो संभारा।
श्रवत नैन मगते जल धारा॥
अति सुन्दर लखि नृपति किशोरी।
कामिन केरि भई मति भोरी॥
कहैं जासु गृह द्रुपद कि कन्या।
धन्य धन्य पाण्डव पति धन्या॥

पुनि पुनि दुःशासनहिं सराहीं।
है बड़ि भाग्य गही जेहि बाहीं॥
आजु धन्य दुर्योधन राई।
आयसु मानि जासु धरि आई॥
लोचन लाभ हमहिं तेहि दीन्हा।
सफल जगत महं जीवन कीन्हा॥
कोउ लखि धर्म दशा दुख पावहिं।
कोउ पछिताहिं शीस महि नावहिं॥

दोहा॥

दुःशासन कह द्रौपदी करहु बात बे काज।
होतन आय सुदासि मह चेरिन के बड़ि लाज॥

चौपाई॥

भीषम बिदुर नये महि शीसा।
द्रोण कृपा उर शोच सरीसा॥
सकल धर्म शीलन दुख पावा।
नीचन के उर आनंद छावा॥
शकुनी करण अनन्द समीछे।
दुर्योधन कह नैन तिरीछे॥

दु:शासन सों कहत पुकारी ।
वसन हीन करु द्रुपद कुमारी ॥
लै बैठारि देहु निजु जानू ।
बन्धव मोर कहातैं मानू ॥
उठ्यौ दुशासन आयसु मानी ।
बिकरण कहा जोरि युग पानी ॥
तव मुख बचन न सोहत ऐसे ।
कुरु कुल तिलक कहत तुम जैसे ॥
वृद्ध द्रोण गुरु भीषम आगे ।
तुम नृप कहत लाज पति त्यागे ॥
देश देश के भूपति राजत ।
तुम दुर्वचन कहत नहिं लाजत ॥
ज्येष्ठ बन्धु के त्रिय जो होई ।
मातु समान कहत श्रुति सोई ॥

दोहा ॥

सभा मह तासु उतारि पति तुमडारी कुरुराज ।
अब अस कहत क्रिजो सुने होत नीचकेलाज ॥

चौपाई ॥

पूरण शशि सम कीरति तोरी ।
जनि महीप करि डारहु थोरी ॥
विनै मानि मम प्रभु अनुरागी ।
देहु द्रुपद तनया अब त्यागी ॥
धर्मराज सन बिन अपराधू ।
नाथ कीन्ह तुम कर्म असाधू ॥
विकरण बचन धर्म मय साने ।
सुनि सरोष रविनन्द रिसाने ॥
सुनु बिकरण तव तन शिशुताई ।
वृद्ध बचन शोभा नहिं पाई ॥
छोटे बदन कहै बड़ि बाता ।
सुनि किमि सकै महीप गुरु ज्ञाता ॥
है यह सभा सकल गुण खानी ।
तुम निज जानि अधिक सज्ञानी ॥
गाल फुलाइ बचन कहि दीन्हें ।
मन माने सब कह लघु कीन्हें ॥

वेष न भूषन के मत योगू।
जानत तुम नहिं सत सब लोगू॥

दोहा॥

खेलहु मिलि सब बालकन जाय सरासन बान।
मन्त्रदेहु जनिनृपन कहं तुमहो शिशु अज्ञान॥

चौपाई॥

बालक हो गृह भोजन करऊ।
निज मन अहमित नेकुन धरऊ॥
दुर्योधन आयसु शिर धरऊ।
सादर सब गृह कारज करऊ॥
कह त्रिकरण सुनु नृप मत जीको।
अब नहिं होनहार कछु नीको॥
जस नृप तस मन्त्री बुधमाना।
अस कहि निज गृह कीन्ह पयाना॥
बहुरि सरोष कहा कुरु राजू।
द्रुपद सुता मम देखु समाजू॥
नैन हीन सब सूझत नाहीं।
बोले तोहि सभा मह ताहीं॥

है यह सभा अन्ध नृप केरी।
केहि प्रकार सूझैरी चेरी॥
हैं हम सुवन अन्ध नृपती के।
भीम सहित तुम जानहुं नीके॥
अन्ध तुमहिं किमि देखहि कोऊ।
देखहु सभा भीम तुम दोऊ॥

दोहा॥

देखी तब अन्धी सभा तुम कह लीन बुलाय।
कीन्हो मम अपमान जिमि तुम अपने गृहपाय॥

चौपाई॥

अब द्रौपदी बसन निज त्यागू।
बैठि जङ्घ मम करु अनुरागू॥
अन्धी सभा न देखै कोई।
जानब गति हमहीं तुम दोई॥
आये चतुर पञ्च पति तोरे।
जे बिनु नैन सभा मिलि मोरे॥
सूझत तुम समेत बहु भीमहिं।
करिहि न क्रोध वृकोदर जीमहिं॥

बहुरि बिलोकि दुशासन ओरा ।
मानत तैं नहिं आयसु मोरा ॥
बेगि द्रुपद तनया नंगिआई ।
लै मम जङ्घ देउ बैठाई ॥
भूप बचन सुनि भीम कराला ।
निकसत रोम रोम प्रति ज्वाला ॥
लपट नयन मग प्रगट बिलोकी ।
लीन गदा रिस रहत न रोकी ॥
बन्धू सकल भीम रुख पाई ।
भये सरोष सुभट समुदाई ॥
पारथ पाणि गही असि मूठी ।
कह नृप होत सत्य मम झूठी ॥

सोरठा ॥

धर्मजवदननिहारि बिकलसकलरिसमारिउर ।
दीनगदामहिडारि भीमबिकटपारथअसिहि ॥

चौपाई ॥

रहे पाण्डु सुत सब शिर नाई ।
बारिज नैन बारि भर साई ॥

चला दुशासन सहष रिसाता।
नृप सन कहो बिदुर मृदु बाता ॥
वचन हमार भूप सुनि लीजे।
पाछे अम्बर हरन करीजै ॥
सत्य असत्य केर अस बीचू।
होइ कषी ज्यों सींच असींचू ॥
बोच अनीति नीति कर भारी।
जिमि निशि अंधियारी उजियारी ॥
कहो बिदुर यह नीकि न रचना।
जनि बोलो अधर्म के बचना ॥
नाश फांस कर नाहिं अंदेशा।
जो तुम करत अधर्म नरेशा ॥
का तुम मन मह ठीक विचारा।
कोउ कछु नहिं करि सकहि हमारा ॥
सुनहुं नृपति कहैं वेद पुकारे।
हैं सदैव प्रभु सङ्ग हमारे ॥
निशु दिन अंधियारे उजियारे।
कर्माकर्म विलोकन हारे ॥

दोहा ॥

तो प्रभु कहं लखि सभा मह सत असत्य गुनि लेउ ।
हिरणाकुश लङ्केश की गति गुनि आयसु देउ ॥

चौपाई ॥

सुनि अस वचन बिदुर तन ताकी ।
भृकुटि कीन्ह तब कुरुपति बांकी ॥

दोहा ॥

भृकुटि भङ्ग कुरुनाथ लखि रहे बिदुर चुप साधि ।
थर २ कांपी द्रौपदी निकट बिलोकि उपाधि ॥

सोरठा ॥

परी बिपति वारीश लखि दरकत उर बज्र को ।
धीरज धरहि महीश निज मन समुझावत बहुरि ॥

चौपाई ॥

कपटद्यूत शकुनी ते हारे ।
बिधि यह गति लिखि दीन लिलारे ॥
अहह दैव दिवसन को फेरू ।
गिरि ते रज रज होत सुमेरू ॥

द्रुपद सुता निज मनहिं विचारा।
का करिहैं कुरुनाथ हमारा॥
सभा मध्य पति पांच हमारे।
वीर काल संग टरहिं न टारे॥
मोहिं उघारि होन कब देहैं।
उठि के भीम अवशि सुधि लेहैं॥
बहुरि सभा यहि भूप अनेका।
समरथ शूर एक ते एका॥
जानहिं मार्ग धर्म पथ केरे।
द्रोण भीषम आदि बड़ेरे॥
यदपि न भूपहि कोन निहोरी।
तो परन्तु लेहैं सुधि मोरी॥
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहि हैं।
अन्त समै राजा सन कहि हैं॥

दोहा॥

अनुचित होन न पाइ है लेहैं मोहिं छुड़ाय।
आजु पितामह ते सरिस धीर बीर को आय॥

चौपाई ॥

पुनि गुरु द्रोण सभा मह सोऊ ।
जिन ते अस्त्र सिखा सब कोऊ ॥
भारद्वाज तनय रणशूरा ।
लेहैं मोहि छुड़ाय जरूरा ॥
इत उत बहु भरोस ठहरावति ।
पुनि पुनि गुनि निज मन समुझावति ॥
बहुरि कहत कुरु नाथ रिसाई ।
खैंचहु चीर दुशासन भाई ॥
बसन लेहु सब आतुर छोरी ।
गहि बैठारु जङ्घ पर मोरी ॥
होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता ।
आलिङ्गन के द्रुपद कि जाता ॥
ह्वै अति बिकल द्रौपदी कांपी ।
लेत राहु चन्द्रहि जिमि झांपी ॥
इत उत दशोदिशन दृग हेरी ।
केहरि मनहुं मृगी बन घेरी ॥

भीषम द्रोण करण दिशि चितई ।
निज पति देखि आस सब बितई ॥

दोहा ॥

सकल सभा दिशि देखि के चितई पाण्डव ओर ।
भीमहि देखि सरोष अति बरजेउ धर्म किशोर ॥

चौपाई ॥

बहुरि कहा कुरुनाथ प्रचारी ।
उठ्यौ दुशासन रिसन संभारी ॥
आतुर कहत बचन कटु धावा ।
मनहुं कृतान्त राहु चलि आवा ॥
एक पाणि लीन्हे गहि केशा ।
यक कर गह्यौ बसन यम बेशा ॥
सकल सभा जननी गति हेरी ।
ग्राम ग्राम गज नगर बसेरी ॥
बहु अवनी पति जे जन साधू ।
बूड़त बारिध शोक अगाधू ॥
वीरन के मुख जोवत अहहीं ।
चहत पितामह अब कछु कहहीं ॥

निश्चय द्रोण चुपाइ न रहि हैं।
अवशि बचन गङ्गा सुत कहि हैं॥
कृपाचार्य्य पति गति लखि वामा।
किमि रहिहैं चुप अश्वत्थामा॥
यहि विधि कृत निज हृदय भरोसा।
शील धोरजे नरगत देशा॥

सोरठा॥

जे शठ कायर कूर मान भङ्ग सब विधि चहत।
सकल सभा पर पूर करत मनोरथ पृथक पुनि॥

चौपाई॥

पकरिसि बसन दुशासन धाई।
सरुष प्रचारत पुनि कुरुराई॥
धीर धुरीन रहे चुप साधी।
भोगत भये सकल अपराधी॥
लखि दुर्दशा द्रुपद तनया की।
शोक ज्वाल पाण्डव उर बाकी॥
बारिज नैन बही जल धारा।
नाइ रहे शिर पाण्डु कुमारा॥

निपट विकल सब पाण्डु किशोरा ।
नहिं विहरै उर कठिन कठोरा ॥
तदपि दुष्ट अस ताथल माहीं ।
जे हर्षत मन धर्कत नाहीं ॥
कुरुनायक को प्रबल प्रतापा ।
तपत मनहुं रवि द्वादश तापा ॥
अति करुणा सब के उर होई ।
प्रति उत्तरु कहि सकत न कोई ॥
भीष्म द्रोण कुरु बिभव बिलोकी ।
रहे चुपाइ सके नहिं रोकी ॥

दोहा ॥

तावण भृकुटि सरोष अतिलखि कुरुनाथ भुवार ।
सकल सभा भय बश कंपत कांपत बारहि बार ॥

चौपाई ॥

कृपाचार्य्य उर शोक अपारा ।
कहिन सकत कछु द्रोण कुमारा ॥
निज शिर नाइ रहे सकुचाई ।
अश्रु पात कृत अति दुख पाई ॥

जे नृप बीर धीर ब्रत धारी।
देखि अकारज महा दुखारी॥
सकत न कहि कछु काहुहि काऊ।
कुरुनायक कर समुझि स्वभाऊ॥
बार बार कह कौरव राजू।
बेगि दुशासन करु अब काजू॥
खैंचन लगो बसन गहि पानी।
द्रुपद सुता तब अति अकुलानी॥
तनया बिकल द्रुपदनृप केरी।
टूटी आस सकल दिशि हेरी॥
काल रूप लखि कौरव नाथा।
जाय रहो मन जहं यदुनाथा॥
राधारमन बचन सुनु मेरे।
कौन बिलाप कलाप करेरे॥
बूड़त बिरह सिन्धु यदुनाथा।
जिमि गहि लीन भरत कर हाथा॥
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा।
राखि विभीषण रावण मारा॥

ध्रुवहि निरादर कृत पितु माता ।
तिन कहं नाथ भये तुम त्राता ॥
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी ।
करि बिलाप दै हांक करेरी ॥

सोरठा ॥

कोउ न रक्षक मोर कृपा सिन्धु सीता रमण ।
अब भरोस प्रभु तोर मन भावै तैसो करहु ॥

चौपाई ॥

दैत्य दलन प्रह्लाद उबारन ।
लागहु मम गोहारि जगतारन ॥
मम अनाथ के नाथ गोसांई ।
सो न होइ मम लज्जा जाई ॥
तुम विन आरत पक्ष गहो को ।
राखु रमापति लाज रहो को ॥
पाण्डु सुतन तजि सुद्धि हमारी
तुम जनि छांड़हु गिरिवर धारी ॥
बैठे सभा सबै अघधारी ।
कोउ न चहत छुड़ावन नारी ॥

बरबश लाज जात अब मोरी ।
त्रिभुवन नाथ शरण अब तोरी ॥
बीते काल दयानिधि ऐहो ।
मोहिं उघारि देखि पछितैहो ॥
ग्राह गहे गज कीन पुकारा ।
तब तुम नाथ न लायउ बारा ॥

दोहा ॥

गोकुल बोरत घेरि घन तहं रक्षा तुम कीन ।
नाश्यो मातुल सूत मद गिरिवर कर धरि लीन ॥

चौपाई ॥

ते तुम नाथ कहां गिरिधारी ।
यह पापी खैंचत मम सारी ॥
खैंचि बसन मम करिहि उघारी ।
का करिहो तब आइ खरारी ॥
गये लाज प्रभु विरद न रहि है ।
कहहु दयाल तुमहिं को कहिहै ॥
सर्बसु हरेउ बच्यो यक बसना ।
सोऊ हरत बचावत कसना ॥

दवा जरत जिमि गोपन राखा ।
कौरव अग्नि दीन्ह गढ़ लाखा ॥
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा ।
दीन दयाल कहां यहि बारा ॥
दारिद दरि द्विज के दुख काटे ।
धनपति सरिस सदन धन पाटे ॥
जिमि गुरुसुत आने यदुराई ।
तिमि राखहु मम लाज न जाई ॥

दोहा ॥

श्री पति दीनदयाल अब राखिलेहु पति मोरि ।
फिरि हरि कैसी करहुगे जब पट लेइहि छोरि ॥

चौपाई ॥

बीच सभा प्रभु मोहिं नंगिआवत ।
करुणासिन्धु दौरि किन आवत ॥
द्रुपद सुता लखि करत पुकारा ।
दीनदयाल विरद सम्भारा ॥
द्वारवती तजि नांगे पायन ।
आतुर आइगये नारायन ॥

प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा ।
प्रगटेउ बसन रूप पट बाढ़ा ॥
बसन रूप धरि बसन समाने ।
धीरज द्रुपद सुता उर आने ॥
खैंचत बसन जोर भरि जेता ।
निकसो बसन बसन मग तेता ॥
देखि चरित्र क्रोध ते पागा ।
परम रोख शठ खैंचन लागा ॥
खैंचत बसन मूढ़ यहि भांती ।
मथत सिन्धु सुर असुर कि पांती ॥
काढ़नि मनहुं शेष भइ सारी ।
दु:शासन जनु देव सुरारी ॥
झिकत सरोख दुशासन सारी ।
निज तन पुरवत बसन खरारी ॥

सोरठा ॥

देखि बसन के बाढ़ि भक्ति प्रेम वश द्रौपदी ।
भै रोमावलि ठाढ़ि विनय करत गद गद गिरा ॥

चौपाई ॥

गयो शोच मन भयो अनन्दा ।
जय यदुबंश कुमुद बन चन्दा ॥
कृष्णचन्द्र तव मैं बलिहारी ।
जय गोपाल गोबर्द्धन धारी ॥
जय सारंगधर जय असुरारी ।
जय मनमोहन कुञ्ज बिहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा ।
कमल नयन शोभा शत कामा ॥
पीताम्बर धर धरनी पालक ।
जय वसुदेव देवकी बालक ॥
जय तव कर सरोज यदुराया ।
कीन्हेंउ जेहि कर मोपर दाया ॥
जे पद सरसिज मम हित धाये ।
दुशासेनि कर दर्प नशाये ॥
जय मधुशूदन यदुपति स्वामी ।
जय त्रिलोक पति अन्तरयामी ॥

जय अधार जय २ अत्रिकारी ।
जय जय जय केशी कंसारी ॥
जय मम लज्जा राखन हारे ।
जयति यशोदा नन्द दुलारे ॥

दोहा ॥

जय कृपाल करुणायतन जयति कौशिला नन्द ।
मोरपक्ष धर मुरलि धर जय २ आनंद कन्द ॥
जयति सच्चिदानन्द हरि ईश्वर भक्त अधार ।
राखी लज्जा जात जिन जय मम नाथ उदार ॥

चौपाई ॥

निर्भय हर्ष विवश पञ्चाली ।
कहि चिग्घरति जयति बनमाली ॥
जय २ कार पूरि महि रहेऊ ।
दुष्टन बिना सबन जय कहेऊ ॥
देवन देखि सुमन झरि कीन्हीं ।
गहगह गगन दुन्दुभी दीन्हीं ॥
बाढ़त देखि बसन चहुं फेरा ।
मन थिर भयो पाण्डवन केरा ॥

हरि प्रताप दिनकर सम भयऊ।
कौरव सकुचि कुमुद जिमि गयऊ॥
हरिहि पुकारत द्रुपद कुमारी।
खैंचत सरुष दुशासन सारी॥
करत जोर बहु भांति दरेरा।
बाढ़त बसन सकल चहुं फेरा॥
अरुण श्याम सित रङ्ग हरेरे।
भांति भांति के वस्त्र घनेरे॥
पीतरङ्ग के बहुत निकारे।
पीताम्बर के ओढ़न हारे॥

दोहा॥

मिश्रित रंगके पटबढ़े थके दुशासन हाथ।
जे देवन देखे नहीं ते पुरये यदुनाथ॥

चौपाई॥

आपु बसन तन धरि भगवाना।
बढ़ये बिबिधि रङ्ग परधाना॥
द्रुपदी चख पुतरी प्रभु कीन्हा।
बिरदावलि मूरति करि दीन्हा॥

खैंचत चीर दुशासन हारा।
अम्बर मनहुं देवसरि धारा॥
द्रुपदसुता के अम्बर तेरे।
निकसे पट बिचित्र बहुतेरे॥
हारे भुजा दुशासन केरे।
नहिं समात मन्दिर नृप केरे॥
दशसहस्र गज बल थकि गयऊ।
दश गज अम्बर हरन न भयऊ॥
निपट होत अनरथ लखि बाता।
नाना भांति होत उत्पाता॥
शिवा यज्ञशाला बहु बोली।
ढहे सदन अवनी जब डोली॥
अशुभ शब्द कृत रासभ श्वाना।
मेघन बिना ब्योम घहराना॥

सोरठा॥

हींसे सकल तुरङ्ग हयशाला मह बार यक।
चिघरे सकलमतङ्ग निजनिज आश्रमविकलसब॥

चौपाई ॥

भयो दाह दिग कररत कागा ।
तदपि न बसन दुशासन त्यागा ॥
बढ़त विलोकि तजै पुनि धरई ।
अनत गहै थल तजि परि हरई ॥
बिदुर दीख अनरथ भा भारी ।
गेजेहि गृह बिलपत गन्धारी ॥
कहा रिसाइ मन्त्र सुनु मोहों ।
होत अकाज न सूझत तोहों ॥
आजु कृष्ण द्रुपदी तन व्यापे ।
बसन बढ़ाइ बिरद अस्थापे ॥
नहीं होइ सुत धर्म अकाजू ।
जिन के यदुभूषण महराजू ॥
सदा दासकर करत सहाई ।
प्रणतारत भञ्जन यदुराई ॥
जे हरि हने निशाचर राजू ।
सहे दुःख भक्तन के काजू ॥

सोजानो सब बात तुम्हारी ।
नहिं अज्ञान ग्रसित गन्धारी ॥

दोहा ॥

नि विकल प्रह्लाद जिमि जे हरिभक्त अनन्य ।
हअम निकसे खम्भ ते कश्यप हते हिरण्य ॥

सोरठा ॥

ब अनेक उत्पात देखिपरत अनरथ निपटि ।
न चहत सो बात तबतप बलते थंभिरह्यो ॥

चौपाई ॥

अबतैं रानि कहा सुनु मोरा ।
भाग अभाग होत नत तोरा ॥
बसन छुड़ाउ दुशासन करतन ।
चलन चहत नत चक्रसुदर्शन ॥
गन्धारी सुनि अति दुख पाई ।
बिलखत बिदुर सङ्ग उठिधाई ॥
मति हग मुत खैंचत इत चीरू ।
थको पराक्रम भयो अधीरू ॥

भुज थकि गयो घटत नहिं जाना
बसन त्यागि मन अति खिसियान
निज आसन बैठ्यो शिर नाई।
मनहुं रङ्क निधि पाइ गवांई॥
दुर्योधन मन बैठ उदासा।
मानहुं भयो राजपद नाशा॥
श्री हत भयो मान मद भङ्गा।
निपट विकल अपमान तरङ्गा॥
सुनत शोर मारग श्रुति केरे।
पूछत दृगमति सञ्जय तेरे॥
होत कहा यह हाहाकारा।
सञ्जय कह्यो सहित विस्तारा॥

सोरठा॥

सुनत दशा दुखपाय सञ्जय कर गहि पाथि
सभा विलोकेउ जाय कुरुपति करी अनीति

चौपाई॥

मध्य सभा कञ्चन सिंहासन।
जो धृतराष्ट्र नृपति कर आसन॥

बेठि गये द्रुगमति तहं जाई ।
परम रोष नहिं वरणि सिराई ॥
दु:शासन कहं नृप ललकारा ।
बार बार करते धिक्कारा ॥
कहि दुर्वचन रोष करि भारी ।
ता अवसर आई गन्धारी ॥
कीन्हेउ दुष्ट कर्म्म अति नीचू ।
परिहो अधम नर्क के बीचू ॥
दीन्हेउ सरुष शाप गन्धारी ।
द्रुगमति कह सुनु द्रुपद कुमारी ॥
पुत्र वधू ये सकल हमारी ।
मन क्रम बचन अधिक तैं प्यारी ॥
तुम सन सठन कीन अपराधा ।
भइ मम वृद्धापन मह बाधा ॥

दोहा ॥

तोहिं मन सप्रशत मन वाञ्छित बर मांगु ।
न कीन्ह कुकर्म्म सो मम दिशिते सब त्यागु ॥

चौपाई ॥

अब तुम मम निहोर शिर मानी।
करहु क्षमा अपराध भवानी ॥
तनया बेगि मांगु बरदानू।
तुम सम प्रिय मोहिंन कोउ आनू।
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे।
नाहिंन सुता तदपि सम तोरे ॥
बार बार कह नृप वर मांगू।
द्रुपद सुता मन करु अनुरागू ॥
बोली बचन जोरि युग पानी।
सुनहुं नरेश सत्य मम बानी ॥
मोहिं समेत सहित परिवारा।
दास भाव तजि पाण्डु कुमारा ॥
सो नरेश मांगे म्वहिं देहू।
दास भाव बिनु सकल करेहू ॥
बाहन अस्त्र देहु सब काहू।
कीजिय बेगि बिदा नरनाहू ॥

मतिहग कहो तोहि मैं दीन्हा ।
अपर मांगु यह आयसु कीन्हा ॥

दोहा ॥

सुनहुं पिता कह द्रोपदी मन वाञ्छित वरदान ।
मैं पायउं तुम्हरी कृपा नाथ सपथ नृप आन ॥

चौपाई ॥

तव प्रताप अब कुरु कुल केतू ।
फिरि होइहै सुख सम्पति हेतू ॥
उचित विप्र मांगहिं वर चारी ।
पिता कहत असि नीति विचारी ॥
छत्री तीनि वैश्य कुल दोई ।
मांगहिं एक शूद्र कुल कोई ॥
मैं तुव पुत्र बधू छत्रानी ।
मांगहुं तीनि उचित बर जानी ॥
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा
नर नायक मम मानि निहोरा ॥
बुद्धि चक्षु चर चतुर बोलाये ।
सबके बाहन अस्त्र दिवाये ॥

चढ़ि बाहन गहि आयुध हाथा ।
चले अवास धर्म नर नाथा ॥
परसे चरण बुद्धिहग केरे ।
बोले भूप युधिष्ठिर तेरे ॥
लज्जा विवश बचन सुनि तोरा ।
हे सुत होत विकल मन मोरा ॥

दोहा ॥

बचन तोर सुनि तात लज्जित अवन समात में ।
मोहिं अछत यह बात पुत्र परम अनुचित भयउ ॥

चौपाई ॥

होइ तुम्हार परम कल्याना ।
मनु अशीस मम बचन प्रमाना ॥
जीति तुम्हारि राज्य सब लीन्हीं ।
दुर्योधन अनीति बड़ि कीन्हीं ॥
सो मैं तुमहिं देत निज पानी ।
लीजे सुत प्रसाद मम जानी ॥
मतिहग आयसु शिर धरि लीना ।
शीस नवाय गवन गृह कीना ॥

प्रथम नरेश कीन्ह जहं डेरा।
दीन त्यागि त्यहि अवसर हेरा॥
पटल वितान सेन चतुरङ्गा।
चपल तुरङ्गम चमू मतङ्गा॥
सकल धर्म नन्दन तजि दीन्हा।
सहित कुटुम्ब गवन नृप कीन्हा॥
मिले विदुर मारग मह आई।
जात भये निज भवन लवाई॥
रानिन सहित नृपति अन्हवाये।
खान पान विश्राम कराये॥

दोहा॥

इहां उठी कुरुपति सभा गे सब निज निज धाम।
खान पान विश्राम करि दिवस रहा भरियाम॥
द्रोण करण भीषम शकुनि निज २ गृह मग लीन्ह।
खानपान विश्राम पुनि सब भूपन मिलि कीन्ह॥
प्रथम कीन्ह अस्नान पुनि भोजन करि कुरुनाथ।
सबलसिंह आये सभा दुरद दुशासन साथ॥

———

फुटकर काव्य ॥

दोहा——यशवन्त ॥

गलिन गलिन डोलत फिरैं चहुंदिशि फेरै नैन।
झरैबरै ऐंठे लरै कहै रसीले बैन॥ (कञ्जरी)

चौपाई॥

एक नगरी में बसैं बतीस।
बारह पशु औ मनई बीस॥
वहि नगरी को यहै सुभाव।
कटैं मरैं आवै नहिं घाव॥ (शतरञ्ज)
एक ग्राम में राजा आठ।
न्यारे न्यारे सबके ठाठ॥
सुनो सखी एक अचरिज देखा।
एक बही में सबको लेखा॥ (गञ्जीफा)
एक नगरी में सोरह रानी।
तीनि पुरुष के हाथ बिकानी॥
मरन जियन उन पुरुषन हाथ।
कबहुं न सोईं उनके साथ॥ (चौपड़ि)

एक नारी भैांरासी कारी ।
कान नहीं पर पहिरै बारी ॥
नाक नहीं वह सूंघै फूल ।
जेतो अरज तेतनो तूल ॥ (ढाल)

दोहा ॥

चरण अठारह जीव छह बानी बोलैं तीनि ।
है कोई ऐसो चतुर लावै इनको बीनि ॥
(मोर, सारस, बिलार, हाथी, घोड़ा, चील्ह)

चौपाई—खगनियां ॥

हाथी हाथ हथिनियां कांधे ।
चले जात हैं बकुचा बांधे ॥ (गज, गजी)
आधा नर आधा मृगराज ।
युद्धवियाहे आवैं काज ॥
आधा टूटि पेटमें रहै ।
बासूकेरि खगिनियां कहै ॥ (नरसिंहा)
लम्बो चौडी आंगुर चारि ।
दुहो ओर ते डारिनि फारि ॥

जीव न होय जीव को गहै ।
बासू केरि खगिनियां कहै ॥ (ककई)
चारि पांव बांधे ते मोटि ।
अपने दल मा सबते छोटि ॥
दुखी सुखी सबके घर रहै ।
बासूकेरिखगिनियां कहै ॥ (जनानीचोली)

दोहा ॥

कहो पहेली बीरबर सुनिये अकबर शाहि ।
रांधीरहतीबहुतदिनबिन रांधीगलि जाहि ॥ (ईंट)

चौपाई ॥

आधा कुवां नीरसों भरा ।
बादशाह के हाथे धरा ॥ (नीमचह)

दोहा ॥

ज़र्दरङ्ग बेसन की नहीं बनाते हैं ।
खाने की कुछ बस्तु नहीं परखातेहैं ॥
(मोहर, अशरफ़ी)

चौपाई ॥

भीतर गूदर ऊपर नांगि ।
पानी पिये परारा मांगि ॥
तिहि को लिखी करारी रहै ।
बासू केरि खगिनियां कहै ॥ (दवाइत)

दोहा—रहीम ॥

नैन सलोने अधर मधु कहु रहीम घटि कौन ।
मीठो भावै लौन पर अरु मीठे पर लौन ॥

कवित्त—यशवन्त ॥

जङ्घै जमाय दुओ घुटुआन लों पेंडुरी ठीली दुहू दिशि चाले । कानन मध्य में दीठि रहै थिरता करि के कटि नेकु न हाले ॥ जानै तुरङ्गम के मनकी गति चाहिये ता विधि चाबुक घाले । सोई सवार कहो यशवन्त बचाये चले जो तमाल दिवाले ॥

राम ॥

मन्दिर बनायो बहु वित्तहू कमायो चित्त चौगुनो बढ़ायो सुख पायो या बीच है। पालकी बहल रथ चहल पहल होत घने सुन्दरी महल द्वार दौलति

की कीचहै ॥ सुनु तू दैकान आजु उठत दुकान तेरी अबतो निदान राम दौलति की खोंचहै । हुण्डी के सकारत सकारत सकारो भयो अबतो सहुकार जूनकारिबो नगीच है ॥

कुञ्ज गोपी ॥

छतं थेई थेई करता साहब सबका वोतो नाथों का नाथ कहावै छेजी । विन्ने आनि मथुरा में अवतार लीना है गोवर्द्धन की पूजा करावे छेजी ॥ जिन्नें नन्द के घरमें आनन्द कीना धार चक्रपै बुन्द वर्षावै छेजी । कहै कुञ्जगोपी यमुना तीरही में मुड़ि मुड़ि कान्हरा बंशी बजावे छेजी ॥

प्रवीन ॥

बूझति हौं यक मंत्र तुम्है प्रभु शास्त्रन में सब त्रिधि मति गोई । प्राण तजौं कि भजौं सुलतानहिं हौंन लजौं लजि है सब कोई ॥ जाते रहै परमारथ स्वारथ तत्त्व विचारि कहौ तुम सोई । जामें रहै प्रभु की प्रभुता अरु मोर पतिव्रत भङ्ग न होई ॥

दोहा——श्यामं ॥

कुन्दन करी उदारता खांड़ निघटि नाजाय ।
बंदोबस्त के कारने नागर बैठे आय ॥

कवित्त ॥

पडुआ मगवाय मुंह बांधो हलवाइन के चासनी न चाटि जांय जौलो सियरायंगी । मृतिका मंगाइ के कुटाइ डारो भाठन को चूहे अरु चूही कहु कैसे नियरायंगी ॥ चारहूं दिशानते बयारिन की बन्दकीजे उड़ने न पावे जौलो तो लो ठहरायंगी । माछिन को मारि डारो चीटिन अवार फारो चींटी दई मारी क्या हमारी खांड़ खायंगी ॥ बीसईं पुस्ति हम बांटे हैंगेंदौरे सुनि बड़े २ वैरिनकी छाती फटिजायंगी । नायन अरु बारिन परोसिन परोहतानि छोटे पाय खोटी खरी हममें कहि जायंगी ॥ सुनुरे हलवाई चलि आई है हमारे यही डेढ़टांक खांड़ चहे ओरहु लगि जायगी । फिरिके से छोटे दिमरकी से जोटे ज़राकाग़ज से मोटे बने बात रहि जायगी ॥

ब्रह्म ॥

पूत कुपूत कुलच्छनि नारि लराक परोस लजावन सारो। भाई अदेख हितू कच लम्पट कपटी मीतु अतीत धुतारो॥ साहब सूम किसान कठोर औ मालिक चोर दिवान नकारो। ब्रह्म भनै सुनु शाह अकब्बर बारहु बांधि समुद्रम डारो॥

केशव ॥

शोभत सो न सभा जहं वृद्ध न वृद्ध न ते जे पढ़े कछु नाहीं। ते न पढ़े जे धर्म न चीन्हहिं धर्म न सो जो दया उर नाहीं॥ सो न दया जु न धर्म धरै धर धर्मन सो जहं दान वृथाहीं। दान न सो जहं सांचु न केशव सांचु न सो जो बसै छल छाहीं॥

महेश ॥

सुनि बोल सोहावन तेरे अटा यह टेक हिये में धरौं पै धरौं। मढ़ि कञ्चन चोंच पखावन में मुक्ताहल गूंधि भरौं पै भरौं॥ तुहि पालि प्रवाल के पींजरे में अरु औगुन कोटि हरौं पै हरौं। विछुरे हरि मोहिं महेश मिलैं तोहि कागते हंस करौंपै करौं॥

सवैया—तोष॥

गोपिन के अंसुवान के नीर पनारे बहे बहिके भये नारे। नारे भये नदियां बहिके नदियां नद ह्वै गये काटि करारे॥ वेगि चलो तो चलो ब्रज में कवि तोष कहैं बहु प्रानन प्यारे। वे नद चाहत सिन्धु भये अब सिन्धु ते ह्वैहैं जलाहल सारे॥

दोहा—रहिमन॥

खीरा शिरसे काटिके मरिये नमक बनाय।
रहिमन करुये मुखन को चहियत यही सजाय॥
रहिमन अंसुआ बाहिरो वृथा जनावत रोय।
घरसे बाहर काढ़िये कौन भेद कहि सोय॥

तुलसी॥

जगमें दिया अनूप है दिया करो सब कोय।
करका धरा न पाइये जो पै दिया न होय॥
मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास।
तुलसी प्रीति सराहिये मुयउ मोत की आस॥

मतिराम ॥

जानत हैं गति चोर की चोर औ साह की साह छलो की छलो। ठग की ठग कामख कामख की अरु जानत छैल छलो की छलो ॥ कच लम्पट की कच लम्पट गति मतिराम नजाने कहाधौं चली। कयहुं फेरिद्यो नथको मुक्तातिहि कारनफिरत गुलाबकली॥

भूप ॥

भूप कहै सुनियो सिगरे मिलि भिक्षुक बीच परौ जनि कोई। कोई परै तौ निकोई करौ न निकोई करौ तो रहो चुपसोई ॥ जानत हौ बलि ब्राह्मण की गति भूलि कुपन्थ भलो नहिं होई। लेइ कोई अरु देइ कोई पर शुक्र ने आंखि अकारथ खोई ॥

शुकदेव ॥

इन नाती पूतन को हितुके में द्वारही द्वार फिराहै करोड़ो। बांधो रहो ममताकी बरारन ज्यों बलो बेल रहे गड़गोड़ो॥ छोड़ि के दीन दयाल की आश

अजानसो ह्वै मैं ऊस रंगोड़ो । एकदिना ये छाड़ि हैं मोहिं यही जिय जानि अभय मैं छोड़ो ॥

ब्रह्म ॥

हृद्ध चढ़े पुनि सूप चढ़े पलना पै चढ़े चढ़े गोद घनाके । हाथी चढ़े फिरि घोड़ा चढ़े सुखपाल चढ़े चढ़े जोम घनाके ॥ वैरोचों मित्र के चित्त चढ़े कवि ब्रह्म भनै दिन बीते पनाके । ईश कृपाल को जाना नहीं अब कांधे चढ़े चलि चारिजनाके ॥

चौपाई—घनश्याम ॥

बिना पागजे पहिरैं झंगा।
बिना नोन जे रींधैं सगा ॥
बिना खाहं जे रोपैं बगा।
ना वह झंगा न सगा न बगा ॥
बिना गुञ्ज बनवावैं गढ़ी।
बिना बद्धकी जोतैं लढ़ी ॥

बिना हइकी रींधें कढ़ी ।
जा वह गढ़ी न लढ़ी न कढ़ी ॥

घाघ ॥

ढीला बेंटु कुल्हारी डारें हंसि के मांगें दम्मा ।
येहो करिके नारि बोलावें घग्घा तीनि निकम्मा ॥
मुये चाम सों चाम कटावें भुइमा सकरे सोवें ।
घाघकहें येतीनो भकुआ उढ़रि जायं फिरि रोवें ॥
तम्बापहिरे हर जोतें अरु पौला पहिरि निकावें ।
घाघकहें येतीनो भकुआ शिर बोझा अरु गावें ॥
काजु सरै नहिं पीछे डोलें सेठा लावें बीनि ।
जाघर धरैं धरोहरि घारी घग्घा भकुआ तीनि ॥
उधरा काढ़ि करैं व्यवहारा छनिहा घरमें तारा ।
बहिनि पठावै सारे के संग तीनहुं को मुंह कारा ॥

चौपाई ॥

चञ्चल नारि बजारै जाइ ।
ठाढ़े बैठे पानु चबाइ ॥
सङ्गलये भैया को सारो ।
घाघ कहैं कछु दारि सकारो ॥

दोहा ॥

सभा बैठि के न्याउ न बूझैं गुनी न गुनहिं पढावैं ।
घाघ कहैं येतीनहु नरकी नृपना प्रजा बढ़ावैं ॥
नारी प्रीति न पतिसों मानै जती प्रीतिहै घरकी ।
राजा ह्वै के प्रजहि सतावै घग्घा तीनउ नरकी ॥

इति

कवियों का जीवन चरित्र॥

शुकदेव॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण हेमकर के मिश्र कम्पिला नगर के वासी थे आलमगीर बादशाह के समय में देहली नगर को गये बादशाह से भेट की और अपनी विद्या का प्रकाश दिखलाया बादशाह बहुत प्रसन्न हुये एक दिन बादशाह की सभा में कई एक कवि और शुकदेव जी भी बैठे थे कि नगर में किसी के यहां कुछ उत्साह के कारण नौबत बजरही थी बादशाह के कान में वह शब्द पहुंचा बादशाह ने कहा कवि लोगो कहो तो इस नौबत में क्या शब्द निकलता है, और कवियों ने तो अपना अपना मन माना बताया परन्तु शुकदेव मिश्र ने कहा कि जगताश्रय इस बाजा में यह शब्द निकलता है॥

दोहा ॥

द्वार ह्माम ना बजत कहत पुकार पुकार ।
हरि बिसराये पशु भये परत चाम पर मार ॥

बादशाह इस दोहे को सुनतेही बहुत प्रसन्न हुये और मिश्रजी को कुछ रुपया और कविराज उपनाम देकर बिदा किया फिर ये कविराज कुछ दिन देहली में ठहर कर और २ राजा नव्वाबों की भेट की और जिस अमीर के यहां जाते थे वहां बड़ी प्रतिष्ठा पाते थे उस समय में ये मिश्रजी बड़े नामी प्रसिद्ध कवियों की गणना में थे वहां से अपने जन्मस्थान कम्पिला को आये तिस पीछे गढ़-अमेठी के राजा हिम्मतसिंह के यहां गये फिर नव्वाब फ़ज़िल अलीखा के यहां गये इस दशा में इन्होंने अपनी काव्य को प्रकाश किया अर्थात् पिङ्गल, रसार्णव, फ़ाज़िलअली प्रकाश अध्यात्म-प्रकाश आदि कई ग्रन्थोंकी रचनाकी और जब वृद्धा-वस्था को प्राप्त हुये तब अपना सम्पूर्ण घर बार त्याग कर श्री गङ्गाजी के तट बैठ कर वहां कुछ

काल सर्व गुणाकर कृपा सागर परमेश्वर के ध्यान में अपना चित्त लगाकर अपने शरीर को त्याग किया ॥

गिरिधर ॥

गिरिधर भाट जयपुर नगर के बासी महाराज जयशाह सिंह जयपुर राज्याधिकारी के समय में थे इन्होंने व्यवहारिक उपदेश में कुण्डलिका कही हैं इनका वचन बहुत पुष्ट और मन रञ्जन है उक्त महाराज ने इनकी बुद्धि की चिमित्कारी देखके इनको कविरायकी पदवी दीथी इन्हों ने अपनी काव्य· में अपना नाम (गिरिधर कविराय) कहा है, प्राचीन मनुष्यों की कहावत है कि जिसको एक सौ कुण्ड-लिका इनकी जिह्वाग्रहों उसको मन्त्री से मन्त्र लेनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है और यह भी पुराने मनुष्यों का वाक्य है कि गिरिधर जीने कुछ कुण्ड-लिका बनाने का अपने मन में विचार किया था परन्तु वह विचार अधूराही रह गया और आयु काल उनका पूरा होगया तिस पीछे उनकी स्त्री ने शेष कुण्डलिका बनाई हैं जिन कुण्डलियों के

जलील ॥

सय्यद अब्दुलजलील बिलग्राम के बासी थे अरबी, फ़ारसी, हिन्दी भाषा में बहुत निपुण थे औरंग ज़ेब बादशाह के समय में इन को सिफ़ारत की खिलत अर्थात् दूतता का वोहदा मिला था ये सय्यद साहब देहली से ईरान् के बादशाह के पास भेजे गये थे वहां फ़ारसी विद्याके पढ़नेमें बहुत श्रम किया था और जब ईरान से पलट कर देहली में आये तब औरंग-ज़ेब बादशाह के यहां और २ बादशाहों के नाम ख़त लिखने के मुंशी हुये इन्हों ने अरबी, फ़ारसी, में कई पुस्तकों की रचना की है और हिन्दी भाषा में जो काव्य की रचना की है तिस में अपना भोग (जलील) कहा है हिन्दी भाषा में इनके गुरू हरि-वंश मिश्र बिलग्राम के बासी थे॥

गुरुदत्त ॥

गुरुदत्त कान्यकुब्ज ब्राह्मण सुकुल कनवज के समीप मकरन्द नगर के बासी हिन्दी भाषामें बहुत अच्छे कवि थे इन्होंने फुटकर काव्य तो बहुत की

है परन्तु (पक्षीविलास) नामक एक पुस्तक कही है जिसमें सब पक्षियों का जुदा २ रङ्ग ढङ्ग स्वभावादि का वर्णन किया है जिन दिनों पक्षी विलास की रचना करते थे तब कबूतर पक्षी के वर्णन में (गुरुदत्त तुम्हें यह छांड़िबे टोला) यह पद अन्त में कह गये जब पीछे को शोचा तो जाना कि यह वाक्यागन पड़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य करके यहां का बास छूटैगा दैव योग से गोरख पुरकी ओर किसी राजा के यहां गये वहां बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकार दिये वहां गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के १८६३ संवत् में इस संसार से पधारे ॥

रामप्रसाद ॥

ये कवि बिलग्राम के रहने वाले जाति के भाट थे नायका भेद में बहुत प्रवीण लखनऊ के बादशाह मुहम्मद अलीशाह के समय में थे ॥

श्री लाल ॥

पण्डित श्रीलाल गुजराती ब्राह्मण शास्त्रावदीच

जयपुरके राज्य में भांडेर ग्राम के बासी थे संस्कृत में बहुत निपुण थे आगरे के कालेज में भी कुछ दिन पढ़ाया संवत् १८४८ ईसवी में जब पश्चिमोत्तर देशीय मथुरा आदि आठ ज़िलओं में सर्कारी पाठशाला नियत हुये तब ये पण्डितजी श्रीयुत बजोटर जनरल साहब बहादुर पश्चिमोत्तरदेशीय पाठशालाधिकारी की आज्ञानुसार नवीन पुस्तकोंकी रचना हिन्दी भाषा में करते थे और बहुतसी पुस्तकोंका उल्था हिन्दीभाषा में किया है अब जो पुस्तकें हिन्दी भाषाकी पश्चिमोत्तर देश में पढ़ाई जाती हैं उनमें बहुत करके उन्ही पण्डित जी की रचनाकी हैं जैसे शालापद्धत, समय प्रबोध, अक्षरदीपिका, गणितप्रकाश, बीजगणित, भाषाचन्द्रोदय, ईश्वरतानिदर्शन, ज्ञानचालीसी आदि हैं ॥

जब सन् १८५२ ईसवी में आगरा नगर में नारमलस्कूल नियत हुआ तब ये पण्डित जी वहां के हेडमास्टर नियत किये गये पांच वर्ष उस स्कूल के हेडमास्टर रह कर चन्देली ज़िलअ के डिपुटी

इन्स्पेक्टर हुये फिर सन् १८७८ ई० में गवालियार के कालेज के हेडमास्टर १५०) रुपये मासिक के नियत हुये ये महाराज संस्कृत तो जानतेही थे परन्तु गणित विद्या में ऐसे कुशल थे कि इस समय में इनको गणिताचार्य्य कहना चाहिये सन् १८६०ई० में ज्वरादि रोग में ग्रसित हुये श्रोर आगरा नगर में आकर श्रीयमुनाजी के समीप शरीर त्याग करके सुरलोक का मार्ग लिया ॥

नारायण ॥

नारायण कविजीने संस्कृत में हितोपदेश नामक पुस्तक से उसका उल्था हिन्दी भाषा में किया है परन्तु अपना ग्राम धोम संवत् कुछ भी नहीं लिखा है इससे उनका श्रोर कुछ व्योरा नहीं ज्ञात होता है ॥

तुलसीदास ॥

ये सरयूपारीण ब्राह्मण राजापुर नामक ग्राम यमुना जी के दक्षिण तट प्रयाग राज से १५ कोस पश्चिम के रहने वाले थे प्रथम तो पाण्डित्य के द्वारा

अपना निर्वाह करते थे परन्तु अन्त को अपनी स्त्री के उपदेश से संन्यास धारण करके अयोध्या पुरी, चित्र कूट, काशोजी आदि तीर्थों में रहते रहे श्रीरामचन्द्र जीके उपासक थे इसी संन्यास धर्म्म में रामायणकी रचना सात प्रकार की की है अर्थात् रामायण, कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका आदि और बहुत सी फुटकर काव्य कही है मरण समय से पहिले तुलसी दास जीको यह ज्ञान होगया था कि मैं अमुक दिन इस संसार से पधारूंगा तब यह दोहा लिख कर अपने मित्रों को दिखा दिया ॥

दोहा ॥

संवत् सोरह से असी असीवरुण के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तजे शरीर ॥

उनके लेखानुसार उनका देहान्त हुआ ॥

शिवप्रसाद ॥

ये बाबूजी मुर्शिदाबाद के राजा डालचन्द जी के प्रपैात्र हैं बंगला, संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, अंगरेज़ी विद्याओं में बहुत कुशल हैं परन्तु बहुत प्रमाणिक

लोग कहते हैं कि ये बाबूजी ग्यारह विद्या के लिखने पढ़ने में अभ्यास रखते हैं ये बाबूसाहब बहुत दिनों से सर्कारी काम पर नियुक्त हैं अब इन दिनों काशीआदि कई ज़िलओं के पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर हैं और हिन्दी, उर्दू भाषा में बहुत सी पुस्तकों की रचना की है इबारत ये बाबूसाहब ऐसी लिखते हैं कि जिसके पढ़ने और सुनने से जीनहीं भरता है ये बाबूजी अंगरेज़ी सर्कार के बड़े ख़ैरख़्वाह हैं और बुद्धि विद्या के तो जाने मूर्तिही हैं बहुधा जब कभी श्रीयुत गवर्नर जनरल बहादुर हिन्दुस्तानाधिकारी को कुछ हिन्दुस्तान के विषय में पूछने के लिये प्रतिष्ठित मनुष्यों की सम्मति लेना आवश्यक होती है तब ये बाबूजी भी बुलाये जाते हैं ईसवी संवत् १८५७ में जब ग़दर हुआ था तब बाबूजी ने बड़ी ख़ैरख़्वाही की थी जिसके वेतन में श्रीमती महारानी इङ्गलिस्तान और हिन्दुस्तानाधिकारणी क्वीन् विक्टोरिया ने प्रसन्न होकर इनको (सितारा हिन्द) का ख़िताब दिया है ॥

वंशीधर ॥

वंशीधर कान्यकुब्ज ब्राह्मण बाजपेई बैस वाड़े में रायबरेली के ज़िले चिन्ताखेड़ा के रहने वाले हैं संस्कृत बिद्या में बहुत कुशल भाष्यान्त तक व्याकरण इनका पढ़ा है और कुछ यह भी नहीं कि अपने घर में येई पण्डित हुये हैं इनके पूर्व पुरुषों में बड़े २ पण्डित होगये हैं पहिले ये पण्डित जी पश्चिमोत्तर देश के सरिश्तःतालीम में पुस्तकों का उल्था करते थे तिस पीछे आगरा के नार्मल स्कूल में सिकण्ड मास्टरी पर नियत किये गये जब पुस्तकों का उल्था करते थे तब बहुत सी पुस्तकें हिन्दी भाषा और बहुत सी उर्दू भाषा में उल्था की हैं और बहुत सी अपनी युक्ति से नवीन पुस्तकें बनाई हैं ॥

देव ॥

देवदत्त कान्यकुब्ज ब्राह्मण त्रिपाठी कनवज नगर के समीप कुसुमड़ा ग्राम के रहने वाले लखनऊ के नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला के समय में हुये थे पहिले तो और २ राजा नव्वाबों के यहां जाया

करते थे पिछाड़ी को उक्त नव्वाब साहब के यहां आये नव्वाब साहब ने इनकी कविताई और चतुराई देखकर इनकी प्रतिष्ठा की और कुछ वर्षोडा निबन्ध कर दिया ये कवि बंगला में जिसको फैज़ाबाद कहते हैं रहने लगे, इन्होंने अपनी काव्य की रचना में शब्द रसाइन, अष्टजाम ये दो पुस्तकें रस काव्य में बहुत अच्छी कही हैं और फुटकर सामयिक काव्य भी की है और अपना भोग (देव) कहा है।

केशव दास ॥

केशव दास सनाढ्य ब्राह्मण थे देहली के महा प्रतापी अकबरबादशाह के समय में हुये थे उस समयसे अब तक के और किसी कविने ऐसी गुरुआशय की चमकदार काव्य की रचना नहीं की है ओरछा के राजा इन्द्रजीत के यहां ये कविजी रहा करते थे वहां उन्हीं राजा के नाम से चार पुस्तकें अर्थात् रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, कवि प्रिया, विज्ञानगीता की रचना की थी जिसमें विज्ञानगीता तो ज्ञान के विषय में और शेष तीनों रसकाव्य हैं जिनका आशय

कहना बहुत कठिन है इससे जाना जाता है कि केशव दासजी पिङ्गल, नायका भेद; अलङ्कार, लक्षणा व्यञ्जना, कोष आदि जो काव्य के अङ्ग हैं तिनमें बहुत विज्ञ थे प्राचीन लोग कहते चले आते हैं कि रसिकप्रिया के एक कवित्त का एक चरण (मखतूल के झूल झुलावत केशव भानु मनो शनि अङ्कलिये) ऐसा लिखा है जिसमें असम्भव उपमा होगई है जिससे स्वप्न में श्रीराधा महारानी जीने कहा कि तुम्हारी प्रेतों कीसी बुद्धि है तुम प्रेत होवोगे तिस पीछे कुछकाल व्यतीत कर ओरछा में प्रेत यज्ञ करके केशवदासजी ने अपना शरीर त्याग किया और प्रेत हुये॥

नरोत्तम॥

नरोत्तम ब्राह्मण सीतापुर के ज़िलअ़ बाड़ी नामक ग्राम के बासी थे जिन्होंने सुदामा चरित्र एक छोटी पुस्तक की रचना की है जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र महाराज और सुदामाजी के प्रेम प्रीति की भेटका वर्णन है॥

भोलानाथ ॥

भोलानाथ ब्राह्मण कनवज नगरके वासी थे इन्होंने बेताल पच्चीसी को भाषा छन्द में रचना की है॥

सबलसिंह ॥

सबल सिंह चौहान छत्री चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इस लिये बहुत से सज्जन यान्त्रिक मान्त्रिक पण्डित बुलाकर पुत्र उत्पन्न होने के हेत देव पूजन का प्रारम्भ कराया बहुत दिनों तक पूजन होता रहा परन्तु पुत्र होने की कुछ आश न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराश हुये तब सब पण्डितों ने एकमत होकर कहा कि महाराज यदि आपके पुत्र होता तो यही तो था कि आपका नाम चलता सो उस नाम के टूटजाने का सन्देह था तिससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिल कर आप के नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हज़ारों वर्ष आपका नाम इस भू मण्डल पर बना रहै इस बातको राजाने स्वीकार किया और आज्ञा दी कि महाभारत जो संस्कृत

में है उस्को भाषा काव्य में कहो तब सब पण्डितों ने विक्रम के संवत् १७२७ में महाभारत को भाषा छन्द प्रबन्ध में कहने का प्रारम्भ किया और कुछ काल में सम्पूर्ण भारतको भाषा काव्य में सबलसिंह जीके नाम से कहा है।

यशवन्तसिंह ॥

यशवन्त सिंह बघेले क्षत्री तिरवा नामक ग्राम कनवज नगर से छः कोस दक्षिण के राजा थे संस्कृत विद्या में पण्डित, काव्य में बड़े कवि, समर में बड़े शूर, योग तप में योगी, पण्डित, कवि, गुणी लोगों का आदर सत्कार बहुत करते थे संस्कृत के अठारहों पुराण उन्होंने अपने पुस्तकालय में रक्खे थे वे अब तक उनके पौत्र राजा, इन्द्रनारायण जी के यहां विद्यमान हैं,भाषा काव्य की रचना करने में बड़े कुशल थे शृङ्गार शिरोमणि, शालहोत्र दो पुस्तकों कीरचना की जिनमें अपना भोग यशवन्त कहा है, इन महाराज जीके कोई पुत्र न था इस कारण अपने भाई का पुत्र गोद लियाथा और ताल

और श्री दुर्गा जी का मन्दिर बनवाने के मनोर्थ से तीन लाख रुपये ख़र्च करने का सङ्कल्प करके काशी जी मे बहुत उत्तम पाषाण का मन्दिर और ताल के दरवाज़े मंगवा कर ताल और मन्दिर बनवाने का प्रारम्भ किया परन्तु ताल तो महाराज जीके मनका माना बन चुका और मन्दिर पनियां सोत मे जुड़कर पृथ्वी तल तक आने पाया था कि एक दिन रात्रि के समय महाराज को कुछ ज्वर आया दो चार दिन ज्यों त्यों कर बीते अन्त को अबश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में इस अनित्य निर्मूल संसार को त्याग कर स्वर्ग का मार्ग तकाया उनके पश्चात उनके छोटे भाई पीतम सिंह जी जो उनके स्थानापन्न हुये उस मन्दिर को पूरा किया जिन लोगों ने उस मन्दिर को देखा है वे कहते हैं कि गङ्गा और यमुना के बीच में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

खगनियां ॥

रञ्जीत पुरवा नामक ग्राम जो उन्नाम के ज़िले में है वहां एक बासू नामक तेली की लड़की (खगनियां)

नामक थी यद्यपि कुछ पढ़ी लिखी न थी परन्तु पहेली बनाने में बहुतही कुशल थी, लोग कहते हैं कि खगनियां अपने व्याह के थोड़े ही दिन पीछे विधवा होगई तब उसने अपने पिता और अपना नाम चलने के हेतु पहेलियों की रचना में मन लगाया ॥

बह्म ॥

राजा वीरबर का भोग है ये महाराज कान्यकुब्ज द्विवेदी अर्थात दुबे ब्राह्मण कान्हपुर से दक्षिण ओर यमुना जीके समीप बाराअकबर पुर के रहने वाले थे अकबर शाह बादशाह के बड़े नामी मुसाहबों में शिरोमणि थे शास्त्र विद्या में पण्डित, दान में कर्ण और विक्रम, शील का समुद्र, धर्म्म कर्म्म में यमदग्नि, बुद्धि में बृहस्पति के सदृश्य, सच पूछिये तो राजा वीरबर जी को विप्र वंश अवतंश कहना चाहिये तो थोड़ाहै क्योंकि उस समय से अब तक कोई और दूसरा ब्राह्मण ऐसे दर्जे के नहीं पहुंचा और न नाम चलाया कि जो आज तक कहावत चली जाती है कि इस मनुष्य वा उस लड़के अथवा वे राजा की

बुद्धि को क्या कहना है वे तो मानो दूसरे बीरबर हैं, उन्होंने जो काव्य भाषा में की है वह बहुत मन रञ्जन है ॥

राम ॥

रामशरण कान्यकुब्ज ब्राह्मण हमीर पुर के निकट किसी ग्राम के रहने वाले थे, राजा हिम्मतगिरि बहादुर जो शुजाउद्दौला नव्वाब के सूबेदार थे तिन के यहां रहा करते थे साधारण कवि थे फुटकर जो कुछ काव्य की है उसमें अपना भोग राम कहा है ॥

कुञ्जगोपी ॥

गौड़ ब्राह्मण जयपुर की राज्य के रहने वाले थे साधारण काव्य की है कोई ग्रन्थ नहीं निर्म्माण किया है इस कारण उनके विशेष समाचार नहीं जाने गये ॥

प्रवीण ॥

ओरछा नगर के राजामहाराज इन्द्रजीत के यहां, एक बेश्या थी जिसका नाम रायप्रवीण था यद्यपि वह बेश्या थी परन्तु कुछ विद्यावान और काव्य की रचना भी करती थी प्राचीन लोग कहते हैं कि वह

बहुत बुद्धिमान थी इसी कारण महाराज इन्द्रजीत जीकी सम्पूर्ण सभा उसको रायप्रवीण कहती थी एक बार अकबर शाह बादशाह ने उसकी चतुराई सुन कर उसको बुलाया जब वह सभा में गई और उचित स्थान पर खड़ीको गई तब बादशाह ने अपने मनमें यह शोचा कि यदि इस समय इसकी चतुराई की वार्त्ता सुनी जावे तो राज्य सम्बन्धी कार्य्य में बिघ्न होगा इस्से रात्रि की सभा में इसका वार्त्तालाप सुनना उचित है चोबदार को आज्ञा हुई कि इस समय इसको लेजाओ रात्रि को लाइयो परन्तु वह तो वेश्या उसके जीमें कुछ औरही बात आई उसने हाथ जोड़ शिर झुकाय कर यह दोहा पढ़ा ॥

दोहा ॥

विनती राय प्रवीण की सुनिये शाह सुजान ।
जूठी पत्तल भषत हैं बारी बायस श्वान ॥

बादशाह यह सुनके चुप साध रहे और कहा कि इसको अपने घर पहुंचा दो वह अपने घर आे—

रक्षा में आई जो कुछ फुटकर दोहे छन्द उसने कहे हैं तिनमें बहुधा अपना भोग प्रवीण कहा है ॥

श्याम ॥

श्याम लाल कवि का भोग है ये कवि कोड़ा जहानाबाद के निकट किसी ग्राम के रहने वाले थे गाजीपुर असोथर के राजा भगवन्तसिंह खीचर के यहां रहते थे साधारण कवि थे फुटकर काव्य की है ॥

महेश ॥

महेशदत्त पांड़े कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज नगर के निकट मीरा की सराय के बासी थे ज्योतिष विद्या में बहुत विशेष भाषा काव्य में कोष पिङ्गल अलङ्कार नायका भेद के जानने वाले थे अयोध्या के राजा महाराज संरमान सिंह बहादुर कायमजङ्ग के यहां रहते थे सामयिक काव्य करते थे सन् १८६३ ई० में अर्धाङ्ग रोग के कारण कुछ दिन रोग भोग कर अपने जन्म स्थान पर शरीर त्याग किया ॥

तोष ॥

तोष निधि कान्यकुब्ज ब्राह्मण कम्पिल नगर के

वासी संस्कृत में पण्डित भाषा काव्य में बड़े कवि फरुखाबादके नव्वाब कायमखां के यहां रहा करते थे इन्होंने अपनी काव्य में अपना तोष भोग कहा है इनकी काव्य रचना में एक छोटी सी पुस्तक व्यङ्गशतक नाम जिसमें सौ दोहे हैं बहुतही उत्तम बनी है जिसके देखने से यह सूचित होता है कि ईश्वर से मोक्ष मांगने में ऐसे वचन कहे हैं जैसे कोई अपने बाप दादा के ऋणी से अपना रुपया मांगता है इस स्थान पर दृष्टान्त के लिये दो दोहे तोष जीकी काव्य के लिखे जाते हैं जिस्से उनकी ढिठाई करना निश्चय है ॥

दोहा ॥

विश्वम्भर नामैं नहीं कि महीं विश्व मों नाहिं।
इन द्वै मों झूठो कवन यह संशय मन माहिं ॥ १
शेष सहस मुख नित रटत तासों अफरत नाह।
नाम जपै वो दीन सों कहा हिये अति चाह ॥ २

इस वाक्य के सिवाय और फुटकर काव्य सामयिक कों है ये तोषजी मुहम्मद शाह बादशाहके समयमें थे ॥

मतिराम ॥

ये कवि कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण टिकमापुर ग्राम के रहने वाले थे काव्य कोष में बहुत निपुण संस्कृत में अच्छे पण्डित औरङ्गजेब बादशाह के यहां बहुधा रहा करते थे समस्या पर कवित्त कहते थे अपनी काव्य रचना में रसराज, ललित ललाम ये पुस्तकें नायका भेद की कही हैं ॥

भूप ॥

भूषनारायण भाट कान्हपुर के ज़िले में काकूपुर ग्रामके रहने वाले नव्वाब शुजाउद्दौला के समय में हुये थे भाषा काव्य की शक्ति थी शिवराज पुर के राजा की वंशावली छन्द प्रबन्ध में कही है और सामयिक काव्य भी कही है ॥

घनश्याम ॥

ये कवि कान्यकुब्ज ब्राह्मण इटावे के ज़िले के किसी ग्राम के बासी थे नव्वाब आसफ़द्दौला के समय में मियां अल्मास अलीख़ां की छावनी जब इटावे के समीप कुदरकोट ग्राम में थी तब ये

घनश्यामजी मियां साहब की सभा में आया करते थे वहां समय पाकर इसी प्रकार के सामयिक चौतुका कहते थे जिनमें रेफ नहीं बोला जाता है ।

घाघ ॥

ये कवि कान्यकुब्ज ब्राह्मण कान्हपुर के ज़िले के किसी ग्राम के बासी थे साधारण काव्य सामयिक चौतुका या दोहे कहते थे ॥

———:o:———

अपूर्व-अज्ञात शब्दों का तात्पर्य ॥

---oo---

पु=पुल्लिङ्ग	सं=संस्कृत	अ=अरबी
स्त्री=स्त्रीलिङ्ग	भा=भाषा	ए=एकवचन
न=नपुंसकलिङ्ग	फ़ा=फ़ारसी	ब=बहुबचन

[अ]

अयोध्या प्रसाद, पु० ए० सं० लाला अयोध्या प्रसाद खत्री बिलग्राम के रहने वाले, लखनऊ के बादशाह मुहम्मद अली शाह के निज दीवान का नाम है।

अरुण, न०ए०सं० लाल, प्रात समय का सूर्य्य।

अब्रबहारी, पु०ए०फ़ा० बसन्त ऋतु का बादल।

अनित्य, पु०ए०सं० जो सदैव न रहै।

अम्बरीष, पु०ए०सं० एक राजा का नाम है।

अटक, स्त्री०ए०भा० पञ्जाब देश की नदी है।

अदेव, पु०ए०सं० राक्षस, निशिचर।

अन्ध, पु०ए०सं० नेत्रहीन, शूर, अन्ध धृतराष्ट्र
एक दैत्य का नाम।

अन्धक, पु०ए०सं० महादेव जी।

अभिषेक, पु०ए०सं० तिलक, टीका, रोचना।

अनुकूल, पु०ए०सं० प्रसन्न।

अप्रमेय, पु०ए०सं० बेप्रमाण, जिसका प्रमाण नहो।

अन्तक, पु०ए०सं० अन्त करने वाला, एक राक्षस का
नाम है।

असि, स्त्री०ए०सं० खड्ग, तलवार।

आकाशनदी, स्त्री०ए०सं० मन्दाकिनि नदी।

असुहर, पु०ए०सं० प्राण हरने वाला, राम चन्द्रजी के
एक बाण का नाम है।

अवदात, पु०ए०सं० दाता, देनेवाला।

अनाधार, पु०ए०सं० जिसका आधार न हो, जिसको
ठहरने का स्थान नहो, बेसहारा।

अक्ष, पु०ए०सं० चोपड़ खेलने के पांसा।

अहमित, पु०ए०सं० अतुल, बेमान।

अश्वत्थामा, पु०ए०सं० द्रोणाचार्य्य के पुत्रका नाम।

अश्रुपात, पु०ए०सं आंसू गिरना, रोना।
अन्तरिक्ष, पु०ए०सं पृथ्वीओर आकाश का बीच।
अवनि, स्त्री०ए०सं० पृथ्वी, ज़मीन।
अष्टधातु, पु० ब० सं० आठ धातु ये हैं सोना, चांदी,
तांबा, रांगा, सीसा, जस्ता, लोहा, पारा।
अङ्गारमती, स्त्री० ए० सं० कर्ण की स्त्री का नाम।
अजातिअरि, पु० ए० सं० युधिष्ठिर।
आनन, न० ए० सं० मुख।
आसु, पु० ए० सं० शीघ्र, जल्द।

[इ]

इलतमिष, पु० ए० अ० देहली के एक बादशाह का
नाम।
इन्द्रजीत, पु० ए० सं० रावण का पुत्र मेंघनाद।
इन्द्रजीत जित, पु० ए० सं० लक्ष्मण।
इन्द्रगयन्द, पु० ए० सं० इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

[ई]

ईश, पु० ए० सं० स्वामी, मालिक।
ईर्षा, स्त्री० ए० सं० द्वेष।

[उ]

उलूक, पु० ए० सं० घुघुआ।

[ऐ]

ऐश्वर्य्य, पु० ए० सं० तेज,प्रताप।

[क]

कपोत, पु० ए० सं० कबूतर।

कटक, न० ए० सं० सेन,फ़ौज,बङ्गाले देश में एक नगर का नाम।

कमण्डल, न० ए० सं० तूंबा,तोंबा।

कलपद्रुम, न० ए० सं० कल्प वृक्ष।

कलिन्द्र, न० ए० सं० पर्वत,पहाड़।

कर्क, पु० ए० सं० एक दैत्य का नाम।

कबन्ध, पु० ए० सं० एक राक्षस का नाम।

कनकसूत्र न० ए० सं० सोने के दाने जो सूतके धागे में पिरोहे हों,माला।

कर्ण, पु० ए० सं० कुन्तीपुत्र, युधिष्ठिर का भाई।

कपूरतिलक, पु० ए० सं० एक हाथी का नाम।

करवाल, स्त्री० ए० सं० तलवार।
कम्बूक, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।
कलहंस, न० ए० सं० छन्द विशेष।
करटक, पु० ए० सं० एक सियार का नाम।
कालकेतु, पु० ए० सं० कालका पताका, प्राणलेने वाला।
कायर, पु० ए० भा० डरपोक, भगोड़ा।
कालकूट, पु० ए० सं० विष, ज़हर।
कामी, पु० ए० सं० दुर्योधन के एक सेवक का नाम।
कालनिशि, स्त्री० ए० सं० दिवाली की रात्रि।
किङ्करी, स्त्री० ए० सं० दासी, टहलुई, चेरी।
कुन्ती, स्त्री० ए० सं० युधिष्ठिर की माता।
कुरु, पु० ए० सं० पाण्डव कौरव के पुरुषों में एक
राजा का नाम।
कुरुनन्दन, पु० ए० सं० दुर्योधन।
कुटनी, स्त्री० ए० भा० जो स्त्री झूठ सच कह कर
और स्त्रियों को बहकावे।
कुठार, पु० ए० सं० फरसा।
कृतान्त, पु० ए० सं० यम।

कृपाचार्य्य, पु० ए० सं० दुर्योधन के यहां के एक
बलवान योधा का नाम।
केसरी, पु० ए० सं० सिंह, हनुमान के पिता का नाम।
कैटभ, पु०ए०सं० एक दैत्य का नाम।
कोदण्ड, पु० ए० सं० धनुष।
कौरव, पु०ब०सं० कुरु राजा के बंश में जो उत्पन्न हो।

[ग]

गदा, स्त्री०ए०सं० लाठी।
गदगद, पु०ए०भा० दुःख अथवा सुख में मुख से
वचन न निकले उस दशा का नाम।
गहवर, पु०ए०भा० घबड़ाना।
गङ्गाधर, पु०ए०सं० दुर्योधन के दलमें एक राजा था
गङ्गासुत, पु०ए०सं० भीष्म पितामह।
गङ्गोदक, पु०ए०सं० गङ्गाजल, एक प्रकार का छन्द।
गजपुर, पु०ए०सं० हस्तिना पुर।
गीतका, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द।
गोदावरी, स्त्री०ए०सं० एक नदी का नाम।

[च]

चर्म्म, न० ए० सं० ढाल।
चराचर, न० ब० सं० चर और स्थिर।
चामर न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द।
चारहु युग, न० ब० भा० सतीयुग, त्रेता, द्वापर, कलि।
चित्रग्रीव, पु० ए० सं० एक कबूतर का नाम।
चैद्यसुत, पु० ए० सं० शिशुपाल का पुत्र।
चौपाई, स्त्री० ए० भा० एक प्रकार का छन्द।
चञ्चरीक, न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द।

[ज]

जमलबन्धु, पु० ए० सं० अर्जुन।
जाम्बुवान, पु० ए० सं जामवन्त।
जामवन्त, पु० ए० भा० एक बलवान रीछ का नाम।

[त]

तनत्राण, पु० ए० सं० शरीर की रक्षा।
ताड़का, स्त्री० ए० सं० एक राक्षसी का नाम।
तारक, न० ए० सं० एक प्रकार का छन्द।

तालमाली, पु० ए० सं० दुन्दुभि दैत्य के झाड़ के
वृक्षका नाम, ताड़वृक्ष ।
तून, न० ए० सं० तर्कस ।
त्राता, पु० ए० सं० रक्षक ।
त्रास, पु० ए० सं० डर, भय ।
त्रिभङ्गी, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।
त्रिशिरा, पु० ए० सं० एक राक्षस का नाम ।
तृष्णा, स्त्री० ए० सं० इच्छा ।
तोमर, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।
त्रोटक, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।

[द]

दण्डक, न० ए० सं० एक छन्द का नाम ।
दम्भ, पु० ए० सं० थोरी बात को बहुत कहना ।
दशरथ, पु० ए० सं० अयोध्या के राजा, श्री रामचन्द्र
जी के पिता ।
दमनक, पु० ए० सं० एक सियार का नाम ।
दमोदरमास, पु० ए० सं० कार्त्तिक का महीना ।

दलचतुरङ्ग, पु०ए०सं० जिस दल में चार प्रकार
के योधा हों, हाथीपर, घोड़पर, रथपर, पैदल।
दिग्पाल, पु०ए०सं० दिशाका रक्षा करने वाला।
दिग्दाह, पु०ए०सं० दिशाकी ओर प्रकाश होय।
दिमिरको, स्त्री०ए०हिं०भा० चमड़े की चकती जो चर्खा
के तकुये में लगती है।
दुर्योधन, पु०ए०सं० धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र का नाम।
दु:शासन, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।
दुरद, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।
दुर्जन, पु०ए०सं० दुष्ट।
दूषण, पु० ए० सं० एक राक्षस का नाम,दाग लगाना,
दोष लगाना।
दुरदन्ती, पु०ए०सं० एक हाथी का नाम।
देव, पु०ए०सं० देवता।
दोधक, न०ए०सं० एक छन्द का नाम।
द्रोण, पु०ए०सं० पाण्डव कौरव के गुरु।
द्रोणनन्द, पु०ए०सं० द्रोण का पुत्र, अश्वत्थामा।
द्वारावती, स्त्री०ए०सं० द्वारिका पुरी।

तकर्म्म, न०ए०सं० जुवा खेलना।
पद, पु०ए०सं० द्रोपदी के पिता।
पदसुता, स्त्री०ए०सं० द्रुपदराजा की कन्या।
पदी, स्त्री०ए०सं० पाण्डव की स्त्री, राजा द्रुपद की पुत्री।

[ध]

रा, स्त्री०ए०सं० पृथ्वी, धरती, ज़मीन।
र्मकुमार, पु०ए०सं० युधिष्ठिर।
र्मराज, पु०ए०सं० युधिष्ठिर।
नञ्जय, पु०ए०सं० अर्जुन।
, पु०ए०सं० एक राज कुमार का नाम।
तराष्ट्र, पु०ए०सं० दुर्योधन के पिता।
मुख, पु०ए०सं० एक प्रकार का बाजा।

[न]

, पु०ए०सं० एक बानर का नाम।
म नगर, न०ए०सं० हस्तिना पुर।
कुम्भिला, पु०ए०सं० राक्षसों के पूजन करने का स्थान।

नित्यनिमित्त, पु०ए०सं० प्रतिदिन करना

निर्जन, न०ए०सं० जहां मनुष्य न हों।

निरन्तर, न०ए०सं० जिस्से अन्तर न हो

नील, पु०ए०सं० एक बानर का नाम।

नैऋत्यन, पु०व०सं० राक्षसों का नाम।

नकुल, पु०ए०सं० अर्जुन का एक भाई

[प]

पङ्क, न०ए०सं० चहला, कीचड़।

पट्टिस, पु०ए०सं० एक हथियार का नाम।

परिघ पु०ए०सं० एक हथियार का नाम।

पटल, पु०ए०सं० कनात।

परितोष, पु०ए०सं० धीरज।

पथित० पु०ए०हिं०भा० बटोही, राही, मुसाफ़िर।

पारथ, पु०ए०सं० अर्जुन।

पितामह, पु०ए०सं० भीष्म।

पुरन्दर, पु०ए०सं० इन्द्र।

पञ्चभूत; न०व०सं० काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह

इन पांचों का नाम।

पाण्डव, पु०व०सं० पाण्डु का वंश ।
प्रश्नोत्तर, पु०ए०सं० सवाल जवाब ।
पाञ्चाली, स्त्री०ए०सं० द्रौपदी ।
प्रवाल, पु०ए०सं० मूंगा ।

[फ]

फरज़न्द, पु०ए०फा० पुत्र, लड़का ।
फरसा, पु०ए०सं० परशुराम जी का अस्त्र ।

[ब]

बजह, स्त्री०ए०अ० मुजराईवस्तु ।
बलि, पु०ए०सं० दैत्यन में एक राजा ।
बलभद्र, पु०ए०सं० श्री कृष्ण जी के बड़े भाई थे ।
वसन्ततिलक, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।
बड़वानल, पु०ए०सं० समुद्र के तले जो अग्नि है ।
वपु०, न०ए०सं० शरीर, अङ्ग, देह ।
बामन, पु०ए०सं० विष्णु का अवतार जो राजा बलि के द्वारे गये ।

बालि, पु०ए०सं० वानरों में एक राजा का नाम, अङ्गद का पिता।
वायुपुत, पु०ए०सं० हवा का पुत्र, हनुमान।
वारमुखी, स्त्री०ए०सं० वेश्या, पातुर।
वाहुलीक पु०ए०सं० पाण्डु के पुरखों में थे।
वायस, पु०ए०सं० काग, कौवा।
वितान, न०ए०सं० तम्बू।
विजया, ए० सं० एक प्रकार का छन्द।
विशासेन, पु०ए०सं० कर्ण के पुत्र का नाम।
बिदुर, पु०ए०सं० पाण्डव के सौतेले भाई दासी पुत्र थे।
विदुष, पु०ए०सं० पण्डित।
विराट, पु०ए०सं० विराट देश के राजा का नाम।
विकर्ण, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम
वीरवर, पु०ए०सं० बड़ा बहादुर।
वृद्धिचत्त, पु०ए०सं० धृतराष्ट्र।
वृकोदर, पु०ए०सं० भीम।
वृषसेन, पु०ए०सं० कौरव दलमें एक योधा का नाम।
वर्द्धमान, न०ए०सं० वर्दवान नगर।

बेतपाणि, पु०ए०सं० बेत जिसके हाथ में हो

बेताल, पु०ए०सं० प्रेत, भूत ।

वेणु, पु०ए०सं० पुराने एक राजा का नाम

ब्रह्मरूपका, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द

ब्रह्मारण्य, स्त्री०ए०सं० एक बनका नाम ।

व्याघ्र, पु०ए०सं० बाघ, शेर ।

[भ]

भव, पु०ए०सं० संसार, दुनिया ।

भद्र, पु०ए०सं० आनन्द, कल्याण ।

भरद्वाज, पु०ए०सं० द्रोण के पिता ।

भारती, स्त्री० ए० सं० सरस्वती ।

भिण्डिपाल, पु०ए०सं० एक प्रकार का अस्त्र ।

भीष्म, पु०ए०सं० धृतराष्ट्र के चचा ।

भीम, पु०ए०सं० अर्जुन के एक भाई का नाम

भुवदेव, पु०ए०सं० विप्र, ब्राह्मण ।

भुजङ्गप्रयात, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।

रिश्रवा, पु०ए०सं० कौरव दलमें एक योधा था ॥
गुनन्दन, पु०ए०सं० परशुराम जी ।

[म]

कराच, पु०ए०सं० खर राक्षस के पुत्र का नाम ।
गहा, पु०ए०सं० मगध देश का राजा ।
न्दर, पु०ए०सं० पर्वत, पहाड़ ।
घवा, पु०ए०सं० इन्द्र ।
द, पु०ए०सं० शनिश्चर ।
नन्दिनि, स्त्री०ए०सं० मन्दोदरी ।
नमनोहर, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।
हधामनी, स्त्री०ए०सं० चन्देली ।
त, पु०ए०सं० बड़ा, बृहत ।
नधाता, पु०ए०सं० पुराने एक राजा का नाम ।
मुड़ी, स्त्री०ए०अ० नैबन्धिक, मुकर्रर ।
लिनी, स्त्री०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।
रा, पु०ए०सं० एक प्रकार का अस्त्र ।
ड़माली, पु०ए०सं० सदाशिव, महादेवजी ।

मुण्डमाल, स्त्री०ए०सं० मुण्डन की माला।
मृगि, न०ए०सं० संजीवनि।
मृणाली, स्त्री०ए०सं० कमल की नाल।
मोदक, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द।

[य]

ययाति, पु०ए०सं० पुराने एक राजा का नाम।
यादव, पु०ए०सं० यदु का वंश।
युधामन्यु, पु० ए० सं० दुर्योधन का एक भाई था।
युधिष्ठिर, पु०ए०सं० पांडु के बड़े पुत्र।

[र]

रविनन्दन, पु०ए०सं० कर्ण।
रजस्वला, पु०ए०सं० स्त्री जब मास धर्म से हो।
रासभ, पु०ए०सं० गर्दभ, गदहा।
रिद्धि, स्त्री०ए०सं० ऋद्धि मादिक।
रूपसेन, पु०ए०सं० बर्द्धवान का राजा था।

[ल]

लघुपतनक, पु०ए०सं० एक कौवा का नाम।

लक्ष्मणकुमार, पु०ए०सं० दुर्योधन के पुत्र का नाम।
लावण्य, न०ए०सं० सलोना, निमकीन।

[श]

शकुनी, पु०ए०सं० दुर्योधन का मामा था।
शपथ, पु०ए०सं० सौगन्ध, क़सम।
शतरञ्ज, स्त्री०ए०अ० एक प्रकार के खेलकी वस्तु।
शल्य, पु०ए०सं० युधिष्ठिर का मामा था।
शिवा, स्त्री०ए०सं० सियारी।
शिशुपाल, पु०ए०सं० चन्देली का राजा था।
शशिविन्दु, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम।
शायर, पु०ए०अ० कवि।
शाखाविलासी, पु०ए०सं० वानर, बन्दर।
शायक, पु०ए०सं० वाण, तीर।
शैल, पु०ए०सं० पर्व्वत, पहाड़, दुर्योधन के एक भाई का नाम।
शुक, पु०ए०सं० तोता।
शोक, पु०ए०सं० दुःख।

श्रम, पु०ए०सं० कष्ट, मेहनत ।
श्रीफल, पु०ए०सं० नारियल ।
शंख, पु०ए०सं० एक दैत्य का नाम ।

[स]

सगर, पु०ए०सं० अयोध्या के एक राजा का नाम ।
सत्वर, पु०ए०सं० बहुत जल्द ।
सवैया, पु०ए०हिं०भा० एक प्रकार का छन्द ।
समुदाय, पु०ए०सं० समूह, मण्डली, झुण्ड ।
सागर, न०ए०सं० समुद्र ।
साथकी, पु०ए०सं० देब, देवता ।
साधु २, स्त्री०ए०सं० उत्तम, सुन्दर, मनोहर ।
सिद्धि, स्त्री०ए०सं० अणिमादि कादि आठ ।
सिविर, न०ए०सं० स्थान, डेरा, ठहरने की जगह ।
सुदामा, पु०ए०सं० एक ब्राह्मण का नाम, कृष्णमित्र ।
सुन्दरी स्त्री०ए०सं० सुन्दर रूपवान, एक प्रकार का छन्द ।
सुवेष, न०ए०सं० अच्छा भेष, दुर्योधन का एक भाई था ।

सुरनायक, पु०ए०सं० इन्द्र ।

सृष्टि, स्त्री०ए०सं० संसार, दुनिया ।

सोमदत्त, पु०ए०सं० दुर्योधन के एक भाई का नाम ।

सौमित्र, पु०ए०सं० लछिमण जी ।

सैन्धवपति, पु०ए०सं० सिन्ध देश का राजा ।

संयुक्त, न०ए०सं० एक प्रकार का छन्द ।

[ह]

हिरस, स्त्री०ए०अ० लालच ।

हीरा, न०ए०हिं०भा० एक प्रकार का छन्द ।

[क्ष]

क्षुद्रघण्टिका, स्त्री०ए०सं० कटिबन्ध, कमरबन्द । पटुका ।

क्षोभु, पु०ए०सं० व्यर्थ, नेमतलब ।

—०—